भण्डारण भारती

अंक–54

केन्द्रीय भण्डारण निगम

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण एवं तत्संबंधी अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पीड़क जन्तु-नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- वेअरहाउसों में भण्डारित सामान के विरुद्ध बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, शीत श्रृंखला, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड एकीकरण द्वारा लॉजिस्टिक्स मूल्य श्रृंखला की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और संबंधित लॉजिस्टिक्स में वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

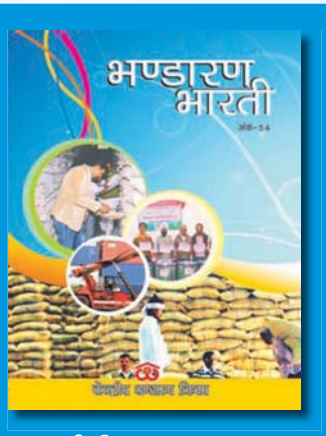

जुलाई-सितम्बर - 2014

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबंध निदेशक

संरक्षक
जे.एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
पवन कांत
महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
विजयपाल सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट www.cewacor.nic.in पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका अंक-54

	विषय	पृष्ठ संख्या
✦	सुस्वागतम्	2
✦	प्रबंध निदेशक की कलम से...	3
✦	सम्पादकीय	4
आलेख		
❍	साहित्य में पंजाबी लेखकों का योगदान –हरभजन सिंह	5
❍	2014 के नोबेल शांति पुरस्कार विजेताः कैलाश सत्यार्थी –नम्रता बजाज	10
❍	जिंदगी जीना कला है बला नहीं –महिमानन्द भट्ट	15
❍	दूसरी दिल्ली –यास्मीन सैयद	18
❍	मुसलमान कवियों का हिन्दी में योगदान –रजनी सूद	32
कविताएं		
✪	मैं हूं भारतवासी –रेखा प्रकाश खिलनानी	9
✪	माँ तू ही तो है मेरी –साहिल आसीवाल	23
✪	कृष्णा को दिल्ली आने का न्यौता –केसीएस नेगी	26
कहानियां		
✧	बदलता जमाना –विजयपाल सिंह	27
अध्यात्म		
✧	कर्म ही पूजा है –प्रकाश चन्द्र मैठाणी	20
विविध		
⅄	प्रशिक्षण कार्यक्रमः एक सुहाना पड़ाव –रुचि यादव	13
⅄	धरती के दो अनमोल रत्न –रेखा दुबे	22
⅄	दिल और दिमाग –मीनाक्षी गंभीर	29
अन्य गतिविधियां		
✶	हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन	24
✶	सचित्र गतिविधियाँ	34
✶	स्वच्छता का महत्व –रणधीर सिंह	40
✶	निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं वेअरहाउस में स्वच्छ भारत अभियान	41
✶	खेल समाचार –राजीव विनायक	47
✶	निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम	48
✶	सेवानिवृत्ति के अवसर पर...	49

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

सुस्वागतम

केन्द्रीय भण्डारण निगम अपने नव–नियुक्त प्रबन्ध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह का हार्दिक अभिनन्दन करता है। आपने 01 अक्तूबर, 2014 को निगम में प्रबन्ध निदेशक का पदभार ग्रहण किया। इससे पूर्व आप कंटेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि0 में निदेशक (परियोजना एवं सेवाएं) के पद पर कार्यरत थे।

श्री हरप्रीत सिंह जी मैकेनिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट तथा फाइनैंस में एम.बी.ए. हैं। साथ ही आप आई.आर.एस.एम.ई. हैं। आपने 1980 में भारतीय रेलवे सेवा से अपना कैरियर आरम्भ किया था। भारतीय रेलवे में वर्ष 1982 से 2000 तक असिस्टैन्ट मैकेनिकल इंजीनियर (डीजल), मुगलसराय, उत्तरी रेलवे, डिप्टी चीफ मैकेनिकल इंजीनियर, पटियाला, डायरैक्टर मैकेनिकल इंजीनियर, रेलवे बोर्ड, रेल मंत्रालय, सीनियर डिवीजनल मैकेनिकल इंजीनियर, दिल्ली डिवीजन, डिप्टी चीफ मैकेनिकल इंजीनियर, उत्तरी रेलवे जैसे विभिन्न पदों पर कार्य किया।

आपने वर्ष 2000 से 2004 तक चार वर्ष के लिए कंटेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लि. में ग्रुप जनरल मैनेजर (तकनीकी) के रूप में कार्य किया तथा वर्ष 2005 से 2006 तक नार्थ सैंट्रल रेलवे, इलाहाबाद में चीफ मोटिव पॉवर इंजीनियर के रूप में भी कार्य किया। आपको पूंजी निवेश निर्णय, टैंडरिंग और उसका मूल्यांकन, परियोजना प्रबन्धन तथा उसके नियंत्रण सहित परियोजनाओं का निष्पादन, तकनीकी एवं वित्तीय पहलुओं के अनुसार परियोजनाएं तैयार करना, परियोजना मूल्यांकन, ग्रीन फील्ड परियोजनाओं को स्थापित कर प्रचालन स्तर तक ले जाना, अपेक्षित सूचनाओं के अध्ययन सहित मई, 2000 से विभिन्न संगठनों में एसबीयू (स्ट्रेटेजिक बिज़नेस यूनिट) प्रमुख, बजट नियंत्रण आदि प्रमुख क्षेत्रों में कार्य करने का व्यापक अनुभव है। आपने कॉनकोर में निदेशक के रूप में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास से संबंधित विभागों के प्रमुख के रूप में कार्य किया जिसमें सभी उपस्कर, सिविल कार्य तथा एम.आई.एस. का विकास भी शामिल है।

केन्द्रीय भण्डारण निगम परिवार प्रबंध निदेशक के पद पर कार्यभार ग्रहण करने के लिए आपका हार्दिक अभिनंदन करता है और आशा करता है कि आपके मार्गदर्शन में निगम प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

निगम की त्रैमासिक पत्रिका 'भण्डारण भारती' के 54वें अंक के माध्यम से आपसे जुड़ते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। गृह पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच सूचनाओं, तकनीकों/विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए एक उचित माध्यम बनाना है। पत्रिका प्रकाशन के अतिरिक्त निगम हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए कृतसंकल्प है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए अभी हाल ही में मंत्रालय द्वारा fuxe dk jktHkk"kk fgnh e mRd"V dk;kUo;u d fy, माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री के करकमलों से f}rh; ijLdkj से सम्मानित किया गया है।

हम सभी जानते हैं कि केन्द्रीय भंडारण निगम जहाँ एक ओर वैज्ञानिक भण्डारण के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ रहा है वहीं अपनी गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है। वर्ष 2013–14 में केन्द्रीय भंडारण निगम ने अब तक का सबसे अधिक टर्नओवर अर्जित किया और वर्ष 1957 में अपनी स्थापना से अब तक निगम निरन्तर लाभ अर्जित कर अपने अंशधारियों को लाभांश प्रदान कर रहा है। यह सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की सत्यनिष्ठता एवं कठिन परिश्रम का परिणाम है।

इस पत्रिका के माध्यम से मैं सभी का ध्यान इस ओर दिलाना चाहूँगा कि एक संगठन को उसके ब्राण्ड से ही पहचाना जाता है और ^lhMCY;lh ck.M* ,d ,lk ck.M gkuk pkfg, tk Hk.Mkj.k d {k= e mR—"Vrk dk ifjpk;d cu। इसके लिए हमें भण्डारण के क्षेत्र में अपनी सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार लाकर अपने ग्राहकों की संतुष्टि के अनुकूल कार्य करना होगा। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमें समर्पित भावना से कार्य करना होगा ताकि हम देश के लॉजिस्टिक उद्योग में अग्रणी ब्राण्ड बन सकें। इसके साथ ही, 'सीडब्ल्यूसी ब्राण्ड' से नैतिकता एवं ईमानदारी जुड़ी होनी चाहिए जो ग्राहक संतुष्टि का महत्वपूर्ण अंग है। हमें वेअरहाउसिंग प्रबन्धन में तकनीक के वैकल्पिक प्रयोग सहित आदर्श स्थापित करने का प्रयास करना होगा ताकि केन्द्रीय भण्डारण निगम अत्याधुनिक भण्डारण पद्धतियों के साथ जुड़कर अपने ग्राहकों को यह विश्वास दिला सके कि उनकी वस्तुएं बेहतर स्थिति में हमारे पास सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त, हमें लॉजिस्टिक वेल्यू चेन के अधिक से अधिक क्षेत्रों में प्रवेश करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि भंडारण, लॉजिस्टिक वेल्यू चेन का महत्वपूर्ण भाग है और अन्य सभी लॉजिस्टिक कार्य भंडारण पर ही आधारित होते हैं। लागत कटौती भी एक ऐसा मुख्य क्षेत्र है जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि हम अपने ग्राहकों को कम लागत पर लॉजिस्टिक सुविधाएं प्रदान कर सकें।

मैं आप सभी से पुनः आग्रह करूंगा कि कार्य–व्यापार के प्रत्येक क्षेत्र में अपनाई जा रही प्रक्रियाओं का पुनर्निर्माण कर परिसम्पत्तियों के रखरखाव जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दें। आज समय की मांग है कि हम प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए केवल अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखें तथा अपने हितों की बजाय संगठन के हितों को सर्वोपरि रखें।

निगम द्वारा 02 अक्तूबर, 2014 को गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं वेअरहाउसों में स्वच्छता अभियान चलाया गया और स्वच्छता की शपथ भी ली गई। इस दिशा में हमें आगे भी प्रयत्नशील रहना चाहिए ताकि स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हो सके। मुझे आशा है कि सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सक्रिय योगदान से हम अपने कार्यस्थल को स्वच्छ रखने के साथ ही अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। निगम के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के अनुरूप समर्पित भावना से राजभाषा हिंदी और वैज्ञानिक भण्डारण के हर क्षेत्र में हम सभी को सर्वश्रेष्ठ स्तर पर प्रयास जारी रखने होंगे ताकि हम भविष्य में बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सफल हो सकें।

शुभकामनाओं सहित,

¼gjihr flg½
ic/k fun'kd

संपादकीय

भण्डारण भारती त्रैमासिक पत्रिका का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। जैसा की आप जानते हैं कि पत्रिका प्रकाशन का उद्देश्य अधिकारियों/कर्मचारियों को मंच प्रदान कर उनकी लेखन प्रतिभा को उजागर करना है और निगम की विभिन्न गतिविधियों को इसके पाठकों तक पहुँचाना है। हर अंक की तरह हमने इस अंक को भी निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साहित्य, अध्यात्म आदि लेखों से संवारा है। इस तिमाही में आयोजित हास्य कवि सम्मेलन एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां इस पत्रिका में फोटोग्राफ सहित प्रकाशित की गई हैं। निगम को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए मंत्रालय से निरंतर राजभाषा पुरस्कार प्राप्त होना भी हमारी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। निगम जहां एक ओर वैज्ञानिक भण्डारण के क्षेत्र में निरंतर अग्रसर है वहीं सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप निगमित सामाजिक दायित्व को पूरा करने में भी सदैव तत्पर है।

निगम में राजभाषा की प्रगति सहित भण्डारण भारती पत्रिका का स्तर निरंतर बढ़ता रहे, इसके लिए हमें सुधी पाठकों का सहयोग एवं मार्गदर्शन सदैव अपेक्षित है, ताकि हम भण्डारण संबंधी अपने कार्यकलापों सहित राजभाषा के क्षेत्र में भी अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकें।

¼ueerk ctkt½
मुख्य संपादक

साहित्य में पंजाबी लेखकों का योगदान

*हरभजन सिंह

साहित्य की उत्पत्ति सृष्टि की उत्पत्ति के साथ मानी जाती है। मानव जन्म के साथ ही कहानियों का जन्म हुआ और लोक गीत भी गाये जाते रहे हैं। विवाह के अवसर पर बोलियां, टप्पे और गीतों के साथ ही हर विधि के लिए अलग–अलग गीत का चलन रहा है। शिशु जन्म पर गीत, विरहा, तीज, भाई दूज, होली पर होरी, छठ पर्व पर भइया के गीत, रोपाई, बिनाई के गीत, धान कूटने के गीत, गंगा जमुना के गीत, आदि सुनने को मिलते रहे हैं। जीवन से जुड़े हर महत्वपूर्ण शुभ अवसर पर गीत रचे गये हैं। आज भी ग्रामीण और छोटे शहरी क्षेत्रों में रहने वाले बुजुर्ग इनकी अहमियत समझते हैं। यह बात और है कि आज फिल्मी गीतों का चलन बढ़ने के साथ, गांव, टोलों और कस्बों से लोक गीत गायब होते जा रहे हैं। फिर भी जब पंजाबी लेखकों की बात आती है तो इन्द्रजीत सिंह तुलसी द्वारा रचे गए गीतों को भुलाया नहीं जा सकता जैसे– एक डाल पर तोता बोले, एक डाल पर मैना..., पानी रे पानी तेरा रंग कैसा..., एक बटा दो, दो बटे चार, छोटी–छोटी बातों में बंट गया संसार, इसी प्रकार प्रेम धवन के गीत – ओ मेरा रंग दे बसंती चोला..., तुझे सूरज कहूं या चंदा...,। फिर शिव कुमार बटालवी के गीत – इक कुडी जिदा नाम मुहब्बत..., की पुछदे हो हाल फकीरां दा...। आदि काल में लेखन प्रक्रिया नहीं थी। मानव ने पत्थरों पर चिह्न बनाए, फिर ताड़ के पत्तों पर लिखा जाने लगा और 19वीं शताब्दी में जर्मन में प्रेस का चलन हुआ। जहां तक पंजाबी साहित्य के प्रकाशन का संबंध है, सबसे पहले भारत में बाइबल की पंजाबी में छपाई की गयी और उसके बाद अन्य साहित्य की छपाई शुरू हुई। डॉ. हरिअप्पा के अनुसार, 'ऋग्वेद मानव जाती का सबसे पहला साहित्यिक दस्तावेज है जो पंजाब की रमणीक, धार्मिक और सभ्याचारक जिंदगी का परिणाम है।'

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि साहित्य चाहे किसी भी भाषा में रचा गया हो, हिंदी में हो या उर्दू में या फिर पंजाबी भाषा में, अधिकांश साहित्य पंजाबी लेखकों की कलम से ही रचा गया। आठवीं शताब्दी पर नज़र डालें तो नाथ सम्प्रदाय का साहित्य। बारहवीं शताब्दी में बाबा फरीद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान साहित्यिक उद्देश्यों के लिए पंजाबी भाषा का विकास था। उस समय पंजाबी भाषा को लोक भाषा माना जाता था और संस्कृत, अरबी, तुर्की तथा फारसी को उच्च वर्ग तथा पढ़े लिखे वर्ग की भाषा माना जाता था। पंजाबी भाषा में काव्य रच कर उन्होंने पंजाबी साहित्य का आधार रखा। चौदहवीं शताब्दी में श्री गुरू नानक देव जी जो मानवता के उपासक कहे जाते हैं, वे मानव जाति की सेवा और ईश्वर के भजन में ही लीन रहे। उन्होंने भारत के अतिरिक्त काबुल, अरब, तिब्बत आदि अनेक दिशाओं की यात्रा की जिनसे उन्होंने पारस्परिक भेद–भाव, द्वेष भावना, छुआछूत आदि बुराईयों को अपनी अमृतवाणी के प्रचार से दूर किया तथा लोगों को अंधकार व रूढ़िवादिता से निकाल कर यर्थाथवादिता व विशाल हृदयता के मार्ग पर अग्रसर किया। 16वीं शताब्दी में भाई गुरदास जी एक अच्छे साहित्यकार और धार्मिक प्रवृति की शख्सियत रखने वाले थे। 1604 में सिखों के पांचवे गुरू श्री गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब को सम्पादित किया। सन् 1707 में, सिखों के दसवें गुरू श्री गुरू गोविंद सिंह जी ने सिखों के नौवें गुरू, श्री गुरू तेग बहादुर जी की बाणी को भी सम्मिलित किया। भाई नन्द लाल 17वीं शताब्दी में पंजाब के क्षेत्र में अरबी और फारसी के कवि थे। गुरू गोविंद सिंह जी जो 52 कवियों का दरबार लगाया करते थे भाई नन्द लाल जी भी उनमें से एक कवि थे। पंजाबी साहित्य में बुलेशाह और वारिस शाह सूफी कवियों के तौर पर प्रसिद्ध रहे हैं। 18वीं शताब्दी के वारिस शाह को उनके महान रोमांटिक काव्य प्रेम कहानी 'हीर रांझा' के कारण उन्हें पंजाबी भाषा का शेक्सपियर कहा गया। जबकि अन्य लेखकों ने भी हीर रांझा पर कहानियां लिखीं, पर प्यार की इस कहानी के माध्यम से भगवान के लिए आदमी का प्यार चित्रित करके जो लोकप्रियता वारिस शाह को प्राप्त हुई, किसी अन्य लेखक को प्राप्त नहीं हुई।

19वीं शताब्दी में पंडित तारा सिंह, काहन सिंह नाभा, भाई वीर सिंह, धनी राम चात्रिक, प्रो. साहिब सिंह, प्रो. पूरन सिंह और अनेक अन्य कवि/साहित्यकार थे जिनका यहां अगर वर्णन किया जाए तो यह लेख बहुत ही लंबा हो जाएगा। इसलिए मैं सीधा आजादी के परवानों की कतार में खड़े 'kgh Hkxr flg की

* सहायक प्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

बात करता हूं। जिसे याद करके आज भी आंखों में आंसू छलछला जाते हैं। हिंद पर फिदा होने वाले इस नौजवान शहीद को एक अच्छा साहित्यकार भी कहा जा सकता है। काकोरी काण्ड की चारों और बड़ी चर्चा हुई थी और इसमें भाग लेने वाले वीरों के प्रति देश की जनता का मस्तक श्रद्धा से झुक गया था। उसी समय क्रान्तिकारी भगत सिंह ने इनके विषय में 'किरती' नामक पत्रिका में दो लेख 'विद्रोही' नाम से निकाले–

1. काकोरी के वीरों से परिचय (मई 1927)
2. काकोरी के शहीदों की फांसी के हालात (जनवरी 1927)

ये दोनों ही ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। 'मैं नास्तिक क्यूं हूं' भी उनकी पुस्तक थी और उन्होंने जेल में रहकर 'मेरी जेल डायरी' भी लिखी।

lvknr glu eaVks उर्दू साहित्य का एक बड़ा लेखक होने के साथ–साथ भाषाओं और देशों की सीमाओं को लांघकर विश्व बिरादरी का हिस्सा बन गया। र्गोकी, चेखव और मोपासाँ जैसे कथाकारों के साथ विश्व के कथा शीर्ष पर खड़ा मंटो एक अद्वितीय कथाकार ही नहीं बल्कि एक आजाद शख्सियत थी। ऐसे लेखक को पाकिस्तानी या हिन्दोस्तानी कटघरों में रखकर देखा नहीं जा सकता।

सआदत हसन मंटो का जन्म समराला, जिला लुधियाना, पंजाब में 11 मई 1912 को हुआ। मंटो की स्कूली शिक्षा एम.ओ. हाईस्कूल अमृतसर में हुई थी। उन्नीस साल की उम्र में ही उसने पत्रिकाओं के रूसी और फ्रांसीसी साहित्य विशेषांको का संपादन किया। 1936 में मुंबई में आकर उसने 'मुसव्विर' साप्ताहिक पत्रिका का संपादन कार्य संभाल लिया। नजीर लुधियानवी ने उसकी क्षमता को भांपा और मंटो का इम्पीरियल मूवीटोन फिल्म कंपनी में कहानी लेखक और संवाद लेखक के तौर पर नियुक्त किया गया।

मंटो के पाकिस्तान चले जाने संबंधी जो कारण बताए जाते हैं, उनमें से एक यह है कि अशोक कुमार को मंटो की कहानी पसंद न आई और इस्मत की कहानी पर 'जिद्दी' और कमाल अमरोही की कहानी पर 'महल' फिल्म बन गयी, इससे मंटो ने अपमानित महसूस किया और पाकिस्तान चला गया।

मंटो की तीन कहानियों 'काली सलवार', 'धुआं' और 'बू' पर विभाजन से पहले हिन्दुस्तान में मुकदमें दायर हुए और विभाजन के बाद पाकिस्तान में दो कहानियां 'ठंडा गोश्त' 'ऊपर नीचे और दरम्यान' पर। उनकी 'खोल दो' कहानी पर मुकदमा तो नहीं चला लेकिन इसके प्रकाशन पर छह महीने तक प्रतिबंध लगा रहा। मंटो अमृतसर रहा हो या लाहौर, दिल्ली रहा हो या बम्बई, उसने अपनी शख्सियत की छाप हर जगह कुछ इस तरह छोड़ी कि उसके प्रशंसक और दोस्त ही नहीं उसके निंदक और आलोचक भी उसे भुला न सके।

उर्दू कहानीकार **Ñ".k pUnj** की कहानियां रूसी, अंग्रेजी, चीनी, तुर्की, रोमन जर्मन और दुनिया की कई अन्य भाषाओं में अनुवाद करके पसंद की गईं। उनका जन्म 26 नवम्बर, 1913 को भरतपुर, राजस्थान के एक पंजाबी परिवार में हुआ था। विद्यार्थी जीवन काल से ही वे शहीदे आजम भगत सिंह के इंकलावी संगठन व राजनैतिक पार्टियों के साथ रहे। उनकी पहली कहानी 'परकान' 1936 में प्रकाशित हुई। उनकी प्रतिभा देखकर उन्हें लाहौर ऑल इंडिया रेडियो में प्रोग्राम असिस्टेंट की नौकरी मिली। फिर वे दिल्ली आ गये। कुछ समय पश्चात्, उन्होंने सरकारी नौकरी त्याग दी और अपनी कलम को ही रोजी रोटी का जरिया बनाने के लिए वे मुंबई पहुंच गए। 1937 में उनका पहला कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ और 1977 तक के जीवन काल में उनके 38 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके थे।

ऐसे और भी पंजाबी लेखक हैं जिन्होंने उर्दू भाषा में साहित्य परोसा। इनमें से मुख्य हैं– रतन सिंह गुलजार, बलवंत सिंह, राजेन्द्र सिंह बेदी, बलराज कोमल, कश्मीरी लाल जाकिर। सरदार दिवान सिंह मफतून ने उर्दू पत्रकारी की।

ghjk flag nnZ एक ऐसी शख्सियत थी जो आधी सदी 1910–1964 तक साहित्य सृजन करता रहा। उन्होंने पंजाबी भाषा, साहित्य और साहित्य चिंतन के क्षेत्र में अद्भुत योगदान दिया। देश की आजादी व समाज की भलाई के लिए उन्होंने संघर्ष किया। अपनी साहित्य सृजन के जरिए अहम भूमिका निभाते हुए उन्होंने कविता, कहानी, जीवनी, सफरनामा, निबंध, आलोचना और इतिहास की दर्जनों पुस्तकें सम्पादित कीं।

पंजाबी कहानी का जन्म 1920 में माना जाता है। कहा जाता है कि पंजाबी की पहली मौलिक कहानी 'कमला अकाली' थी। स. लाल सिंह जी की यह कहानी

1921 में अकाली अखबार में छपी थी। इसके पश्चात ज्ञानी हीरा सिंह दर्द बताते हैं कि 1924 से 1940 के बीच लगभग 30 कहानियां 'फुलवाड़ी' मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'प्रभात लिखारी' और 'पांच दरिया' नामक साप्ताहिक पत्रों ने पंजाबी कहानी को एक नई दिशा प्रदान की। सुजान सिंह, करतार सिंह दुग्गल, मोहन सिंह और संत सिंह सेखों के कहानियों के संग्रह दुःख सुःख (1939) सवेर सार (1940) निकी निकी वासना (1942) तथा समाचार (1943) के प्रकाशन के पश्चात पंजाबी कहानी भारत की और अन्य भाषाओं की कहानी की पंक्ति में आ गई।

x#c['k सिंह पंजाबी उपन्यासकार एवं कहानीकार थे। उन्होंने 1970 तक 60 से भी अधिक किताबें लिखीं जिनमें 12 कहानी संग्रह थे। 1933 में उन्होंने मासिक पत्रिका 'प्रीतलड़ी' आरम्भ की। वे आधुनिक पंजाबी गद्य के पथ प्रदर्शक कहे जाते हैं। उन्हें 1971 में साहित्य अकादमी फैलोशिप भी प्रदान की गई।

ukud flg मुख्य तौर पर उपन्यासकार रहे हैं। उन्होंने काव्य, कहानी व उपन्यास की 60 से भी अधिक पुस्तकें लिखीं। उनका 1942 में लिखा गया 'पवित्र पापी' उपन्यास बहुत ही लोकप्रिय हुआ और इसका हिंदी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद भी किया गया। श्री बलराज साहनी उनके उपन्यास 'पवित्र पापी' से बहुत प्रभावित हुए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित उन्होंने लेख लिखे जिसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाले बाग में जब सैकड़ों लोग मार दिए गए, वहां पर नानक सिंह स्वयं मौजूद थे और उनके दो मित्र भी वहीं मारे गये थे। इसी काण्ड को देखकर खून खौल गया और उन्होंने कविता 'खूनी वैसाखी' की रचना कर डाली। ब्रिटिश सरकार ने इस पर बैन भी लगा दिया। उनके ऐतिहासिक उपन्यास 'एक म्यान दो तलवारां' पर उन्हें 1962 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

20वीं शताब्दी में साहित्यकारों की एक लम्बी कतार है। जैसे मोहन सिंह, बलराज साहनी, बलवन्त गार्गी, करतार सिंह दुग्गल, अमृता प्रीतम, डॉ. हरिभजन सिंह, कुलवंत सिंह विर्क, ज्ञानी संत सिंह मसकीन, दलीप कुमार टिवाणा, शिव कुमार बटालवी, सुरजीत पात्र, अवतार सिंह संधु (पाश), आदि। जैसा कि मैंने पहले भी उल्लेख किया है कि सभी का वर्णन संभव नहीं है। मैं श्री बलराज साहनी के बारे में बताना चाहूंगा कि बलराज साहनी केवल फिल्मी कलाकार ही नहीं थे, वे पंजाबी के महत्वपूर्ण लेखक भी थे। 'मेरा रूसी सफरनामा', 'मेरा पाकिस्तानी सफरनामा', 'गैर जजबाती डायरी', 'मेरी फिल्मी आत्मकथा' आदि रचनाओं का पंजाबी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके बड़े भाई श्री भीष्म साहनी भी बंटवारे के बाद पत्रकारिता से जुड़े रहे। 'इप्टा' नाटक मण्डली में अभिनय भी किया। कुछ समय तक 'नई कहानियां' के सम्पादक भी बने रहे और सात वर्षों तक विदेशी भाषा गृह, मास्को में अनुवादक का कार्य करते रहे। उन्होंने एक दर्जन से भी अधिक पुस्तकों की रचना की और उनके उपन्यास 'तमस' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

cyoUr xkxh एक जाने माने नाटककार, मंच निर्देशक, उपन्यासकार और कहानी लेखक रहे हैं। इनका जन्म 4 दिसम्बर 1916 को बठिंडा (पंजाब) में हुआ था। बलवन्त गार्गी ने कई नाटक लिखे जैसे लोहा कुट, कनक दी बली, सोहनी महिवाल, सुल्तान रजिया, मिर्जा साहिबा, धूनी दी अग। उनकी अंग्रेजी में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनका एक नाटक 'सांझा चुल्हा' दूरदर्शन पर काफी समय तक दिखाया जाता रहा और सभी ने सराहा। इन्हें अपनी पुस्तक 'रंग मंच' के लिए 1962 में साहित्य अकादमी अवार्ड प्राप्त हुआ और फिर वे पद्मश्री से भी विभूषित हुए।

djrkj flg nXxy (1919) ने साहित्य के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। एम.ए. करने के तुरन्त बाद ही वह लाहौर रेडियो में प्रोग्राम पेश करने वाले स्टाफ में थे। 1947 के बाद वह आल इंडिया रेडियो, जलंधर के प्रोग्राम का ऑर्गनाइजर बने, फिर उन्होंने कई वर्षों तक आल इंडिया रेडियो हैदराबाद, रांची, भोपाल, दिल्ली में नौकरी की और फिर नेशनल बुक ट्रस्ट के सचिव नियुक्त हुए। करतार सिंह दुग्गल ने 30 वर्षों में दर्जनों कहानी संग्रह लिखे, जैसे– सवेर सार, पिपल पडीयां, कुड़ी कहानी करदी गई, डंगर, कच्चा दुद्ध, नवां घर, नवां आदमी, करामात। उनके उपन्यास हैं– आंदरां, नूंह ते मास, हाल मुरीदां दा, दिल दरिया आदि।

भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1989 में पद्मभूषण से सम्मानित श्री करतार सिंह दुग्गल को लघु कथाओं के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, नाटकों के लिए गालिब अवार्ड और भारतीय साहित्य के प्रति समग्र योगदान के लिए सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड प्राप्त हुआ। आकाशवाणी और नेशनल बुक ट्रस्ट में सचिव के पद

पर रहने के बाद कुछ वर्ष योजना आयोग के सलाहकार (सूचना) भी रहे।

verk ihre का जन्म 1917 में गुजरांवाला, पंजाब में और शिक्षा लाहौर में हुई। बंटवारे से पहले लाहौर से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'नई दुनिया' का संपादन किया, फिर 'नागमणी' नामक पंजाबी मासिक निकाला। उन्होंने अनेकों उपन्यास, काव्य संग्रह और कहानियां लिखीं। इनकी कहानियों के पात्र मध्य श्रेणी के स्त्री–पुरूष हैं। उनका 'यात्री' नामक उपन्यास भी है और 'रसीदी टिकट' नामक आत्म कथा भी। 1956 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित, 1958 में पंजाब सरकार के भाषा विभाग द्वारा पुरस्कृत और फिर ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित हुईं। उनकी तीन दर्जन से अधिक पुस्तकें पंजाबी में हैं। जिनमें से दो–तीन को छोड़कर सभी का हिंदी में अनुवाद हो चुका है। कुछ अन्य भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त रूसी, जर्मनी आदि यूरोपीय भाषाओं में भी रचनाएं अनूदित की गई हैं।

ऐसे और भी पंजाबी लेखक हैं जिन्होंने हिंदी में साहित्य लिखा, जैसे– कृष्ण कुमार रतु, कुलवंत कोछर, रमणिका गुप्ता, गगन गिल, फूल चंद मानव, धर्मपाल साहिल, सुभाष नीरव, उपेन्द्रनाथ अश्क, कृष्णा सोबती, बलदेव कृष्ण वैद, पद्मा सचदेवा, पृथ्वीराज मोंगा, अजय शर्मा, महीप सिंह, बलदेव वंशी, प्रताप सहगल, डॉ.नरेश, सिमर संतोष, तरसेम गुजराल, कीर्ति केसर, हरिमहिन्द्र सिंह बेदी, संतोष साहनी, रश्मि मल्होत्रा, जगदीश चन्द्र वैद।

dyor flg fodl ने जितने प्रभावशाली ढंग से गांवों के पात्रों और घटनाओं का बयान किया है, कोई और पंजाबी नहीं कर सका। उन्होंने अपनी कहानियाँ प्रगतिवाद के समय लिखीं। प्रगतिवादी लेखक मार्क्सवादी या समाजवादी विचारधारा के अधीन जीवन की घटना को बयान करते हैं।

संत सिंह सेखों, जसवंत सिंह कंवल, दलीप कौर टिवाणा और गुरूदयाल की तरह संतोख सिंह धीर ने गांवों (पेडू) जीवन को ही अपनी रचनाओं में पेश किया है। ik- xjn;ky flg को भी भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार के अतिरिक्त पद्मश्री (1998) साहित्य अकादमी पुरस्कार और सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार आदि भी मिले।

noUn lR;kFkh (1908 में जन्म) पंजाबी का एक निराला कहानीकार है। उनके सोनागाची, तीन बुएआं दा घर, पैरिस दा आदमी, आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए। पंजाबी लोकगीत bdVBk dju e mudk mYy[kuh; ;kxnku gA

efgUn flg ljuk ने भी कई कहानी संग्रह छपवाए। इनके बेटे नवतेज सरना अंग्रेजी भाषा के लेखक थे। पत्रकारिता से जुड़े रहकर Mk- [k'kor flg भी अंग्रेजी में लिखने वाले एक भारतीय कथाकार के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखी। dynhi u;j और jkt fxYy भी प्रसिद्ध नाम है।

vkt dl nkj में पंजाबी साहित्य सभा, दिल्ली, पंजाबी लोक मंच, आल इण्डिया पंजाबी न्यू लिखारी सभा में उपस्थित रहने पर मेरी मुलाकात अनेक कवियों, कहानीकार, गीतकार और अन्य लेखकों से भी होती रहती है। जैसे डॉ. महीप सिंह, इकबाल दीप, डॉ. महिन्द्र कौर गिल, मंजीत सिंह, गुरचरन सिंह चरण, केवल गोस्वामी, अमिया कुंवर, डॉ. गुरचरण सिंह अर्शी, बलबीर माधोपुरी, हरविंदर औलख, प्रो. इंडे, गुलजार सिंह संधू, डॉ. विनीता, मनमोहन बाबा, सवराजवीर, अजीत कौर, प्रभजोत कौर, बचिंत कौर, मोहनजीत, नछत्तर, जोगिन्द्र अमर, डॉ. करनजीत सिंह, भगवान सिंह, दीपक, अरकमल कौर, सुवेग सद्धर, बरजिन्द्र चौहान, कुलदीप कौर पाहवा, डॉ. अजीत सिंह, सेखों लुधियानवी, वरियाम मसत, अमरजीत सिंह, सुरजीत आर्टिस्ट, प्रो. रणजीत सिंह, गुरबचन भुल्लर, डॉ. राजीव थापर, पर मेरे एक बहुत ही अच्छे मित्र Mk- cyno flg cíu हैं जिनके बारे में कहे बिना मेरा यह आलेख अपूर्ण समझा जायेगा। वे नैशनल बुक ट्रस्ट से मुख्य संपादक/संयुक्त निदेशक के पद से सेवानिवृत हुए और अब वे पंजाबी साहित्य सभा के डाइरेक्टर के रूप में कार्यरत हैं। वे पंजाबी साहित्य के सभी क्षेत्र में समर्पित रहें। उन्होंने 30 से अधिक पुस्तकों का संपादन किया और 120 से अधिक पुस्तकों का अनुवाद, जिसमें कहानी, नाटक, जीवनी और 60 पुस्तकें बच्चों के लिए सम्मिलित हैं। उनके द्वारा तैयार किया गया नैशनल पंजाबी कोश के 10 संस्करण बिक चुके हैं। उनके द्वारा तीन और शब्द कोश तैयार किये गये– पंजाबी हिंदी कोश, स्टूडैन्ट नैशनल पंजाबी कोश, हिंदी पंजाबी कोश तथा बाल साहित्य की 8 पुस्तकें और आलोचना की 15 पुस्तकें भी। 31 दिसम्बर 1985 को जब वे नैशनल बुक ट्रस्ट में आए तो पंजाबी पुस्तकों की गिनती वहां केवल

142 थी और आज वहां पंजाबी की 897 पुस्तकें हैं जो अन्य भारतीय भाषाओं के मुकाबले दुगनी हैं। 250 से भी अधिक पुस्तक प्रदर्शनियां, 17 पुस्तक मेले, 40 से अधिक कवि दरबार और बाल साहित्य की गोष्ठियों में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्हें कई सम्मान भी प्राप्त हुए।

ie idk'k th भी 6 अप्रैल 1990 को उर्दू अखबार हिंदी समाचार के सब एडिटर के पद से रिटायर हुए। उन्होंने कई कहानी संग्रह और 4 आत्म कथाएं लिखीं। पहली, 'बन्दें अन्दर बन्दें' (1992), दूसरी, 'आत्म माया' (2005), तीसरी 'मेरी उर्दू अखबार नवीसी' (2010) और चौथी, 'देख बन्दें दे भेख' (2012)।

हिंदी लेखिका अरविंद कौर के बारे में भी कुछ कहना चाहूंगा। अरविंद कौर टेलिविजन की एक सुस्थापित निमात्री एवं निर्देशिका हैं जिनका मुख्य क्षेत्र धारावाहिक, डोक्यूमेंट्री एवं डोक्यूड्रामा है। हिंदी में इनका एक उपन्यास, दो कहानी संग्रह और बाल साहित्य की पुस्तकें हैं।

इतिहास के पन्नों पर पंजाबी साहित्यकारों के कई और भी नाम हो सकते हैं। जिनका वर्णन इस लेख में नहीं किया जा सका। जैसे चरण सिंह शहीद, राम सरूप अण्खी, नवतेज, दलवीर चेतन, मनिंदर सिंह कांग, रघबीर ढंड, नंद लाल नूरपुरी, मोहन भंडारी, जसवंत सिंह विरदी, वरियाम संधू, चंदन नेगी। कैलाश पुरी ने भी अपनी आत्म कथा लिखी और दलीप कौर टीवाणा की आत्म कथा को तो बार–बार पढ़ने को जी चाहता है। इस प्रकार पंजाबी साहित्य में अपना योगदान देने वाले साहित्यकारों की सूची काफी लम्बी है। इनके योगदान का वर्णन समय–समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होता रहता है। अपने लेखन के माध्यम से ये समाज को नई दिशा प्रदान करने में सदैव अग्रसर रहे हैं।

मैं हूँ भारतवासी

रेखा प्रकाश खिलनानी*

मैं भारत की बेटी हूँ, दिल में गर्व रखती हूँ
इरादे मजबूत रखती हूँ, इसलिए अकेले ही निकलती हूँ
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।
हर घर होने वाला है,
सुख व समृद्धि से भरपूर
ऐसा हमारे प्रधानमंत्री ने दिया है आश्वासन
मुझे पूरा विश्वास है उन पर
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

मिट गए भारतवासियों को मिटाने वाले
जिस देश का चिन्ह है शेर, वे दहाड़ते भी हैं शेर की तरह
और अगर वे खड़े हो गए,
तो कोई माई का लाल हमें हरा नहीं सकता
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

हम इतिहास के वो सुनहरे पन्ने हैं,
जहां हर कौम के लोग बसते हैं
दिलदार व दमदार हैं भारतवासी
भारत में हर एक समा जाता है,
चाहे वह किसी भी प्रांत व देश से आए
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

अगर रणभूमि में उतरें,
तो कुर्बान हो जाएँ भारतवासी अपने देश पर
दुश्मनों के दुश्मन, यारों के यार हैं भारतवासी
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

कड़ी मेहनत व तपती धूप में भी नहीं थकते भारतवासी
एक ही कोशिश में पहुंचे मंगलयान पर, हाँ मुझे गर्व है अपने देश पर,
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

हर मुल्क, हर कौम के साथ बसते हैं हमारे भारतवासी
जहां जाते हैं सबको अपना बना लेते हैं भारतवासी
हाँ, मैं हूँ भारतवासी।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

2014 के नोबेल शांति पुरस्कार विजेता : कैलाश सत्यार्थी

नम्रता बजाज*

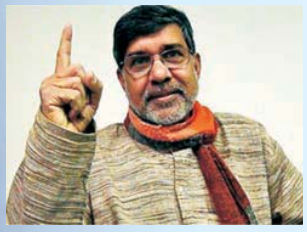

'kkfr jktuhfrd çfØ;k ugh g] cfYd ;s thou thus dk rjhdk gSA lHkh cPpksa dk bles 'kkfey fd;k tk,A ,d ,slk vfHk;ku pyk;k tk,] ftlesa 'kkfr dh LFkkiuk ds fy, lHkh cPpksa dk tksM+k tk ldsA vfHk;ku dk uke gks&fpYMªsu Q,j ihl] ihl Q,j fpYMªsuA

& dSyk'k lR;kFkhZ

वर्ष 1901 में स्वीडिश वैज्ञानिक अल्फ्रेड नोबेल की याद में शांति, साहित्य, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा विज्ञान और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल फाउंडेशन द्वारा शुरू किया गया नोबेल पुरस्कार विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार है। प्रत्येक वर्ष विश्व के महत्वपूर्ण लोगों को यह पुरस्कार विभिन्न क्षेत्रों में किए गए उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रदान किए जाते हैं। इस पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति–पत्र के साथ 14 लाख डॉलर की राशि प्रदान की जाती है। इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए 2014 का नोबेल शांति पुरस्कार श्री कैलाश सत्यार्थी और सुश्री मलाला युसुफ़ज़ई को संयुक्त रूप से दिया जा रहा है। यह पुरस्कार उपमहाद्वीप में बाल अधिकारों को प्रोत्साहित करने, बच्चों और युवाओं के शोषण के खिलाफ कार्य करने तथा सभी बच्चों को शिक्षा का अधिकार देने के लिए संघर्ष करने हेतु प्रदान किया जाएगा। श्री कैलाश सत्यार्थी ने बाल श्रम के खिलाफ अपने आंदोलन को 'सबके लिए शिक्षा' से जोड़ा और इसके लिए यूनेस्को द्वारा चलाए गए कार्यक्रम से भी जुड़े। श्री सत्यार्थी भारत में पैदा होने वाले आठवें नोबेल पुरस्कार विजेता हैं। श्री कैलाश सत्यार्थी ने मलाला से आग्रह किया है

कि वे दोनों मिलकर 'चिल्ड्रेन फॉर पीस, पीस फॉर चिल्ड्रेन' नामक अभियान के लिए काम करें, जहां बच्चे और युवा शांति के लिए आपस में जुड़ सकें।

दिनांक 11 जनवरी, 1954 को भारत के मध्य प्रदेश राज्य के विदिशा जिले में जन्मे श्री कैलाश सत्यार्थी 'बचपन बचाओ आंदोलन' चलाते हैं। वे पेशे से विद्युत इंजीनियर हैं किन्तु उन्होंने मात्र 26 वर्ष की आयु में ही अपना केरियर छोड़कर बच्चों के लिए काम करना शुरू कर दिया था। सन 1980 में उन्होंने शिक्षक का पद छोड़ दिया और 'बॉन्डिड लेबर लिबरेशन फ्रंट' के महासचिव का दायित्व संभाला। उनकी अथक मेहनत का ही परिणाम है कि वे अब तक 80 हज़ार से अधिक बच्चों का जीवन बचा चुके हैं।

एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे कैलाश जी जब पांच वर्ष की आयु में पहली बार स्कूल गए तो उन्होंने विद्यालय के बाहर अपने एक हम उम्र लड़के को जूता पॉलिश करते देखा। वह देखने लगे कि जूता पॉलिश करने वाला बच्चा स्कूल जाने वाले बच्चों के जूतों को निहार रहा है। पहली बार स्कूल जा रहे बच्चे को यह बात अखर जाती है कि सारे बच्चे स्कूल जा रहे हैं लेकिन वह क्यों नहीं जा रहा है। वह इसकी शिकायत अपने शिक्षक से करता है और उचित जवाब नहीं मिलने पर स्कूल के हेडमास्टर से भी इसकी वजह पूछता है। वहां उसे जवाब मिलता है कि इस दुनिया में ऐसा ही होता है। अगले दिन वह लड़का जूता पॉलिश करने वाले बच्चे के पिता के पास जाकर पूछता है कि वे अपने बच्चे को स्कूल क्यों नहीं भेज रहे हैं? वह अभागा पिता इस नन्हें बालक को देखता रह जाता है और कहता है,

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

'बाबूजी, स्कूल में न तो मैं पढ़ने गया और न ही मेरे पूर्वज गए इसलिए यह भी नहीं जा रहा है। हम तो मजदूरी और दूसरों की सेवा करने के लिए ही पैदा हुए हैं।' इस जवाब से हैरान–परेशान वह मासूम चाहते हुए भी उस अभागे बच्चे के लिए कुछ नहीं कर पाता है, लेकिन वह घटना उसके मन के किसी कोने में पड़ी रहती है। वही बच्चा जब जवान होता है तो एक वक्त ऐसा आता है कि वह लेक्चररशिप छोड़कर मासूमों को उनकी मासूमियत लौटाने की मुहिम में लग जाता है। वही मुहिम कुछ ही वर्षों में 'बचपन बचाओ आंदोलन' का रूप धारण कर लेती है और वह बच्चा देश के हजारों बच्चों की जीवन रेखा बन जाता है।

श्री कैलाश सत्यार्थी बचपन से ही दूसरों के प्रति बेहद सहयोगी रहे और हमेशा दूसरों की मदद करते रहे। जब वे 11 वर्ष के थे, तब उन्होंने महसूस किया कि बहुत से बच्चे किताबें न होने के कारण पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं। इसलिए उन्होंने एक ठेला लेकर पास होने वाले बच्चों की किताबें एकत्रित कीं और उन्हें जरूरतमंदों तक पहुंचाया। उन्होंने 'संघर्ष जारी रहेगा' नामक पत्रिका की शुरूआत की। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने शोषित लोगों और बंधुआ मजदूरों की पीड़ा को आवाज दी और समाज का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराया।

श्री कैलाश सत्यार्थी ने स्वामी अग्निवेश के साथ मिल कर 'बंधुआ मुक्ति मोर्चा' का गठन किया। इस संस्था के लगभग 20 हजार सदस्य हैं, जो कालीन, कांच, ईंट भट्ठों, पत्थर खदानों, घरेलू बाल मजदूरी तथा साड़ी उद्योग जैसे खतरनाक उद्योगों में काम करने वाले बच्चों को मुक्त कराते हैं। वर्तमान में देश भर के 12 प्रांतों में 'बचपन बचाओ आंदोलन' की राज्य इकाइयां हैं। श्री कैलाश सत्यार्थी ने 'बचपन बचाओ आन्दोलन' को सफल बनाने के लिए 'बाल मित्र ग्राम' की परिकल्पना की है। इसके तहत किसी ऐसे गांव का चयन किया जाता है जो बाल मजदूरी से ग्रस्त हो। बाद में उस गांव से धीरे–धीरे बाल मजदूरी समाप्त की जाती है तथा बच्चों का नामांकन स्कूल में कराया जाता है। इसके बाद इन बच्चों की 'बाल पंचायत' का गठन किया जाता है। शहरों में यह योजना 'बाल मित्र वार्ड' के नाम से संचालित हो रही है।

बाल मजदूरी के खिलाफ चलने वाले अपने अभियान को कैलाश सत्यार्थी ने देश के साथ–साथ विदेशों में भी फैलाया है। उन्होंने 108 देशों के 14 हजार संगठनों के साथ मिलकर 'बाल मजदूरी विरोधी विश्व यात्रा' आयोजित की, जिसमें लाखों लोगों ने शामिल होकर बाल मजबूरी को समाप्त करने का प्रण लिया। उनके इस प्रयास से प्रभावित होकर सार्क के सदस्य देशों ने बाल मजदूरी पर एक कार्यदल बनाने की घोषणा की। वर्तमान में वे 'ग्लोबल मार्च अगेंस्ट चाइल्ड लेबर' (बाल श्रम के विरुद्ध वैश्विक अभियान) के अध्यक्ष भी हैं। श्री कैलाश सत्यार्थी को समाज सेवा के साथ–साथ भोपाल गैस त्रासदी में राहत अभियान चलाने के लिए भी जाना जाता है।

सत्यार्थी जी का मानना है कि हम सभी बनावटी जीवन जीने लगे हैं। नैतिकता का स्तर पूरी दुनिया में नीचे जा रहा है। इसके साथ ही करुणा का स्तर भी कम हुआ है, विशेषकर सामाजिक करुणा का। उन्होंने कहा कि नैतिकता और करुणा का ह्रास हमारे लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है।

वह कहते हैं कि भले ही हमने विकास के तमाम प्रतिमान स्थापित कर लिए हों लेकिन बचपन के लिए मौजूद खतरों को हम कम नहीं कर पाए। पूरी दुनिया में बचपन खतरे में है लेकिन अपने देश की हालत सबसे खराब है। यहां छह करोड़ से अधिक बाल मजदूर हैं। हजारों बच्चे ह्यूमन ट्रैफिकिंग के शिकार होते हैं। रोजाना हजारों बच्चे मारपीट के शिकार होते हैं। बाल अधिकारों के प्रति हम आज भी उतने सहिष्णु नहीं हो पाए हैं जितना हमें होना चाहिए। देश में लाखों बच्चे ऐसे हैं जो उचित व्यवस्था के अभाव

में मानसिक – शारीरिक शोषण का शिकार हो रहे हैं। ऐसा नहीं है कि देश में बाल अधिकारों से जुड़े कानून नहीं हैं, लेकिन ये कानून या तो इतने दोषपूर्ण हैं कि बाल अधिकारों को संरक्षण नहीं दे पा रहे या व्यवस्थागत अक्षमता के चलते इनका अमलीकरण नहीं हो रहा है। जो भी हो, परन्तु सत्य तो यही है कि ऐसे बच्चों की कमी नहीं जिनका बचपन असमय ही छीन लिया गया है। आज बाल आयोग भले ही बन गया है लेकिन इससे भी कोई ज्यादा लाभ नहीं हुआ है। बच्चों के मौलिक अधिकार की बातें कागजों तक ही सीमित हैं। समाज में बच्चों को उत्तम सुविधाएं देने के बजाए शिक्षा–दीक्षा की उपेक्षा कर उन्हें ऐसे कामों में लगाना बदस्तूर जारी है जो उनके शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालने वाला साबित हुआ है। ऐसे कार्य जो बच्चों के बौद्धिक, मानसिक, शैक्षिक तथा नैतिक विकास में बाधा पहुंचाए 'बालश्रम' की परिधि में आते हैं। बालश्रम के उन्मूलन के लिए 1986 में बने 'बालश्रम उन्मूलन कानून' में भी कई खामियां हैं। इसके अनुच्छेदों से यही प्रतीत होता है कि केवल जोखिम भरे कार्यों में लगे बच्चे ही बाल श्रमिक की परिधि में आते हैं जबकि सच्चाई यह है कि कोई भी स्थिति जो बच्चे को कमाई करने पर मजबूर कर रही हो वह बालश्रम है। रियल्टी शो में प्रतिभागी बच्चों को भी इस श्रेणी में रखा जा सकता है। इन बच्चों की चंचलता, उनकी हंसी, उनका भोलापन सभी को बाज़ार की चीज़ बना दिया गया है। देखने वाली बात यह है कि ऐसे कार्यक्रमों के जरिए बच्चों में कलात्मकता–रचनात्मकता का विकास नहीं बल्कि शॉर्टकर्ट तरीके से प्रसिद्धि पाने की भावना जन्म ले रही है।

वास्तव में बालश्रम पर पूरी तरह रोक लगाए बगैर बच्चों को सही आजादी नहीं दी जा सकती। बालश्रम पर रोक लगाने से बेरोज़गारी भी दूर होगी। हमें इस सचाई को भी समझना होगा कि गरीबी के कारण बालश्रम नहीं बढ़ रहा बल्कि बालश्रम के कारण गरीबी बढ़ रही है। हमें हर बच्चे को शिक्षित करने की दिशा में आगे बढ़ना होगा। इससे बालश्रम की समस्या स्वतः दूर हो जाएगी। आज शिक्षा की दिशा में बालश्रम बड़ी बाधा है। सरकार द्वारा मुफ्त शिक्षा अभियान चलाया तो जा रहा है परंतु इससे देश के सारे बच्चे जुड़ें ऐसी स्थिति अभी नहीं बन पाई है। हमें आने वाले वर्षों में ऐसी स्थिति बनानी होगी तभी बच्चे सचमुच में देश का भविष्य बन पाएंगे।

श्री कैलाश सत्यार्थी पिछले दो दशकों से बालश्रम के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं और इस आंदोलन को वैश्विक स्तर पर ले जाने के लिए जाने जाते हैं। नोबेल पुरस्कार मिलने की सूचना पर वे कहते हैं कि ये सम्मान सवा सौ करोड़ भारतीयों का सम्मान है। ये भारत के लोकतंत्र की जीत है जिसकी वजह से भारत से ये लड़ाई आरंभ हुई और आज दुनिया में हम जीत रहे हैं। ये उन बच्चों की भी जीत है जो अपनी जिंदगी बदलने के कड़े संघर्ष में जुटे हैं। 1980 से अब तक 82,625 बच्चों को बाल मजदूरी के दंश से छुटकारा दिलाने वाले श्री कैलाश सत्यार्थी का मानना है कि अब उनकी जिम्मेदारी और बढ़ गई है।

नोबेल पुरस्कार के अतिरिक्त श्री कैलाश सत्यार्थी को 1994 में जर्मनी का 'द एयकनर इंटरनेशनल पीस अवॉर्ड', 1995 में अमरीका का 'रॉबर्ट एफ कैनेडी ह्यूमन राइट्स अवॉर्ड' तथा 'द ट्रम्पटर अवॉर्ड, 1998 में नीदरलैंड से 'गोल्डन फ्लैग अवॉर्ड', 1999 में जर्मनी का फ्राइडरिच एबर्ट स्टिफंग अवॉर्ड', 2002 में मिशीगन विश्वविद्यालय द्वारा वॉलेनबर्ग मेडल, 2006 में अमरीका का 'फ्रीडम अवॉर्ड', 2007 में 'मेडल ऑफ द इटेलियन सीनेट', 2008 में स्पेन का 'एल्फांसो कोमिन इंटरनेशनल अवॉर्ड' और 2009 में अमरीका के 'डिफेंडर्स ऑफ डेमोक्रेसी अवॉर्ड' सहित कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। श्री सत्यार्थी को नोबेल शांति पुरस्कार मिलने की खबर से हम सभी भारतीयों का सिर गर्व से ऊँचा हो गया है।

प्रशिक्षण कार्यक्रमः एक सुहाना पड़ाव

रूचि यादव*

जीवन की यात्रा में अनेक ऐसे पड़ाव आते हैं जहां बहुत से यात्री एक जगह एकत्रित हो आपस में सुनते–सुनाते, हँसते–मुस्कुराते, सीखते–सिखाते कुछ समय साथ बिताकर फिर आगे की यात्रा पर निकल पड़ते हैं। ऐसा ही एक सुहाना पड़ाव केंद्रीय भण्डारण निगम के प्रशिक्षण कोष्ठक के सौजन्य से हम प्रबंध प्रशिक्षुओ के जीवन में भी आया, जिसका कारण था, 30 दिसम्बर 2013 से 24 जनवरी 2014 के बीच आयोजित आधारभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम।

प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा अर्थात प्राथमिक कुछ दिन ''सैद्धांतिक'' ज्ञानवर्धन (कक्षा कार्यक्रम) तथा बाद के दिनों में ''व्यवहारिक'' ज्ञानवर्धन (फील्ड ट्रिप्स) के अनुसार 30 दिसम्बर 2013 से आईजीएमआरआई, हापुड़ में प्रशिक्षण आरंभ हुआ। पहले दिन से ही सभी साथी प्रशिक्षुओं से मिलना, जानना तथा निगम के उच्चाधिकारियों से परिचित होना, ''इंतज़ार का फल मीठा'' जैसा महसूस हुआ।

निदेशक (कार्मिक) महोदय के पीएसी व्याखान की तर्ज़ पर धीरे–धीरे हम सभी का भी पैरेंटिंग (P), एडल्ट (A) तथा चाइल्ड (C) व्यवहार प्रशिक्षण के दौरान सामने आने लगा। निगम के विभिन्न वरिष्ठ अधिकारीगणों द्वारा अपना ज्ञान तथा अनुभव हमारे साथ साझा किया गया। निगम के बहुत से उपयोगी कानूनों व नियमों जैसे भण्डारण निगम अधिनियम, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, आय कर अधिनियम, सूचना का अधिकार, स्टाफ रेगुलेशन आदि 'नियामकीय पहलुओं' की जानकारी इस दौरान हुई। साथ ही, भंडारण के नियमों, टैरिफ गणना, स्टैक योजना, नमी–ज्ञान, श्रेणीकरण, ग्रेडिंग, सुरक्षा उपकरणों आदि 'तकनीकी पहलुओं' का ज्ञान भी इस दौरान बटोरा।

कीटों और चूहों के उनके शरीरों से भी बड़े–बड़े नामों जैसे राइज़ोप्रथा डोमिनिका, तरोगोडर्मा ग्रनारियम एवेट्र्स, बन्दीकोटा बेंगलेंसिस आदि ने मन को गुदगुदाया भी और पेपर में इनके नाम पूछे जाने की सम्भावना ने दिमाग को सताया भी।

किन्तु इस पड़ाव का सीखना–सिखाना कक्षाओं तक सीमित नहीं था। कक्षा के पश्चात् हॉस्टल में जाते ही टी.टी. तथा बैडमिंटन कोर्ट की ओर दौड़ पड़ना तथा अपनी–अपनी बारी के लिए लड़ाई–झगड़े, रूठने–मनाने का एक अलग ही दौर शुरू होता था। कुछ साथी प्रशिक्षुओं का कबीर दास जी के इस दोहे में ज्यादा विश्वास नज़र आया कि...

ikFkh if<&if< tx e|vk] ifMr Hk;k u dk;
<kbl vk[kj ise dk] iM+s lks ifMr gks;AA

और वैसे प्रबंध शास्त्रों में लिखा भी है कि संगठनों में बने अनौपचारिक सम्बन्ध, औपचारिक संबंधों से अधिक सतत् एवं सुदृढ़ होते हैं।

जानने, सीखने व सिखाने का यह दौर आगे बढ़ा तथा समय आया ''व्यावहारिक'' ज्ञानवर्धन अर्थात फील्ड ट्रिप्स का। केंद्रीय भण्डारगृह मुजफ्फरनगर,राणा प्रताप बाग, आईसीडी लोनी, आईसीडी पटपड़गंज सभी जगह निगम की कार्यप्रणाली के अलग–अलग रूप देखने को मिले। केंद्रीय भंडारगृह, मुजफ्फरनगर में रेलहेड के साथ ही अतिविशाल प्रांगण के प्रबंधन का हुनर समझा तो राणा प्रताप बाग में कोल्ड स्टोरेज तथा मल्टी–स्टोरेज भवन का अदभुत कांसेप्ट। आईसीडी लोनी में सेमो मॉडल की सफलता व मशीनीकरण का सर्वोत्तम प्रयोग देखा तो आईसीडी पटपड़गंज में सभी आईसीडी प्रक्रियाओं की समझ को आत्मसात किया।

किन्तु कैथल में स्थित ''अदानी एग्रो लॉजिस्टिक लिमिटेड'' में बने गगनचुम्बी साईलो तथा अत्याधुनिक

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मशीनीकृत तकनीकी रूप से सुसज्जित लैब देख अपने केंद्रीय भंडारण निगम के गोदाम, चार स्तरों वाली छलनी और सिलाई मशीन जैसी नमी–मापक यंत्र आदि सभी चीज़ें एक पल के लिए बहुत बौनी लगने लगी। लेकिन फिर दिमाग में आया कि निगम के उस कल्याणकारी स्वरूप की प्रतिस्थापना किसी निजी संगठन द्वारा नहीं की जा सकती जो नेगोशिएबल वेअरहाउस रिसीप्ट के माध्यम से किसानों को लाभ पहुंचाता है एवं सार्वजनिक वितरण प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए जन–जन तक अपनी पहुँच रखता है।

इन सभी ट्रिप्स में आईसीपी, अटारी के दौरे का बहुत विशेष महत्व रहा। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को गति देने में निगम कि भूमिका की महत्ता को जाना तो गर्व का अनुभव हुआ। अटारी में भारतीय ध्वजारोहण कार्यक्रम देख मन रोमांचित हो उठा। किन्तु रात्रि में गोल्डन टैम्पल के दर्शन के दौरान गुरुग्रंथ साहिब की शरण में जिस शांति और सुकून का एहसास हुआ तो खलिल जिब्रान कि ये पंक्तिया जेहन में उभर आयी कि...

g b'oj]
eÖk ,sls Kku ls nj j[kuk
tks Ökduk u tkurk gks]
,sls n'ku ¼fQykWlkQh½ ls cpkuk
tks gluk u tkurk gks]
,sls lkgl u nuk
tks nljks dk dke vkuk u tkurk gksA

इस तरह के भावों को साथ लिए अमृतसर से वापस आने के बाद निगमित कार्यालय में प्रबंध निदेशक महोदय सहित अन्य उच्चाधिकारियों के मार्गदर्शन में आयोजित हुई कॉन्फ्रेंस ने आत्मविश्वास में बढ़ोतरी की।

इसी आत्मविश्वास से लबालब हम सभी प्रशिक्षु ''कंटेनर फ्रेट स्टेशन प्रबंध'' के प्रशिक्षण हेतु मुम्बई पहुँचे। पनवेल की ''कोल्कर्ज लॉज'' में पहुँच कर IGMRI, हापुड़ की महत्ता का कुछ ज्यादा ही अहसास हुआ पर मन को यह कह कर समझाया कि..

^^gd ijLrh g cMh ckr exj---
jkt fdl&fdl ls yMk dhft ;sxkA**

इस दौरान, सीएफएस द्रोणागिरी नोड, नवी मुम्बई में सीएफएस/आईसीडी के सभी पहलुओं पर कक्षाएं आयोजित हुईं जिससे परिवर्तित होते समय में भण्डारण पहलुओं कि चुनौतियों, विविधताओं तथा विस्तारण कि आवश्यकता के महत्व का भान हुआ। जवाहरलाल नेहरू पत्तन का दौरा कंटेनर मूवमेंट समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण तो रहा, लेकिन बहुत कम समय एवं एक्सपोज़र के कारण कुछ मायूसी भी हुई। फिर भी, आयात–निर्यात प्रक्रियाओं को गति देने में निगम की भूमिका को जानना निःसंदेह लाभदायक भी रहा।

और इस प्रकार प्रशिक्षण रूपी पड़ाव के अंतिम दिन अर्थात 24.01.2014 को निगम के विविध रूपों का ज्ञान दिमाग में सहेजे, हृदय में अनेक मीठी यादें संजोये, साथी प्रशिक्षुओं से अलविदा कह, सभी जीवन की यात्रा पर निकल पड़े अपने–अपने नियुक्ति–स्थलों की ओर।

प्रशिक्षण की यह छोटी किन्तु महत्वपूर्ण अवधि जीवन प्रयन्त मददगार रहेगी क्योंकि निगम के प्रति जो समझ प्रशिक्षण से पूर्व थी उसकी तुलना में प्रशिक्षण के पश्चात् निश्चित ही सकारात्मक इज़ाफ़ा हुआ है। निगम रूपी परिवार के एक सदस्य होने के नाते अपनी भूमिका का अहसास अधिक गम्भीरता से हुआ है। अंत में, प्रशिक्षण के प्रभाव को इन पंक्तियो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है कि :

D;k pukfr;ka e] D;k dfBukb;ka e---
Çdfpr ugh Hk;Hkhr e----
drO;&iFk ij tks Hkh fey---
;g Hkh lgh] og Hkh lghA

जिंदगी जीना कला है बला नहीं

महिमानन्द भट्ट*

जीवन में कुछ बातें ऐसी होती हैं जो स्मृति पटल पर सदा–सर्वदा के लिए अंकित हो जाती हैं और यदा–कदा उनकी याद आना जीवन को प्रेरणा प्रदान करता है। मेरे उधेड़बुन मन में ऐसी ही प्रेरणाप्रद बातों को उजागर करने का विचार उथल–पुथल कर हिलोरे भर रहा है। कुछ लाइनें लिखकर सोचता हूँ कि लेखन कभी तो सहज–सुलभ होता है और कभी असाध्य। आज फिर लेख लिखने की रुचि तो है लेकिन गति नहीं, भाव और विचार हैं लेकिन एक तारतम्य नहीं, अनुभूति है लेकिन अभ्यास नहीं। ऐसी परिस्थितियों में विचारों को कागज पर उतारना कहां तक संभव है। वास्तव में मैं स्वयं इस रहस्य को नहीं समझा पा रहा कि मेरे पास भाव हैं, विचार हैं, अनुभूति है तो लिखने में क्या बाधा। शायद यह बाधा उत्साहहीनता की हो सकती है, इस बाधा को पार कर मैंने जीवन के मर्मस्पर्शी विभिन्न पहलुओं को उजागर करने वाली कुछ बातों को यहाँ कलमबद्ध करने का प्रयास किया है।

जीवन अर्थात् जिन्दगी ''जन्म से मृत्यु तक'' का वह समय जिसे हर मनुष्य अपने–अपने ढंग और रंग से जीता है। कौन–सा रंग किसके जीवन से मेल खाता है यह अलग बात है किन्तु यह एक व्यावहारिक सत्य है कि जीवन को जीने का ढंग सबका अलग–अलग है, चाहे वह परिस्थितिवश हो या अन्य किन्हीं कारणों से। जीवन की गाड़ी बहुत–सी भूलभूलैयों में से होकर गुजरती है, कौन–सा रास्ता किधर जाएगा, यह पूर्व निश्चित नहीं होता और यदि सच मानें तो पूर्व निश्चित रास्ते पर चलने में न तो कोई मजा है और न ही कोई कला। हम यूँ कह सकते हैं कि चलते–चलते जो स्थिति पैदा हो जाए, उसके अनुरूप अपना कर्त्तव्य निर्धारित करना और हँसते–हँसते हर मोड़ पर घूम जाना सही अर्थों में जीवन है।

आइए, अब कुछ नए रास्तों की तलाश में चलें और देखें कि जीवन में नवीनता और निरन्तरता के लिए हम क्या कुछ कर पाते हैं? क्या हम कुछ ऐसे रास्तों का अनुसरण करते हैं जो हमारे जीवन–पथ को आलोकित करते हैं? यह सत्य है कि हमारा जीवन ईश्वर के हाथ में है, वह जब तक हमसे सेवा लेना चाहेगा हमें जीवित रखेगा और जब चाहेगा बुला लेगा, तो हमें किसी काम से फिर क्या घबराना। यह ठीक है कि thou dk lQj dHkh vklkuh ls dVrk gS vkSj dHkh n`%[kksa ls Hkjk gqvk] ij n`%[kksa ds tatky esa ge bruk u HkVd tk, fd vkxs dk jkLrk V<+k&es<+k gks tk,। हमारा मन हमेशा दिशा देता रहता है और दिल आगे चलने की आज्ञा। यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह इस ओर कितना ध्यान देता है। मैं कुछ बातों का वर्णन प्रेरणाप्रद प्रसंगों के माध्यम से भी करना चाहूंगा।

rukoeqDr

कभी आपने देखा होगा कि एक साधन सम्पन्न व्यक्ति चिड़चिड़ा और उदास रहता है और गरीब व्यक्ति प्रसन्न। इसकी वजह यही है कि गरीब व्यक्ति हर प्रकार के बंधनों से तनावमुक्त रहता है। सिकन्दर ने जब एक साधु से कहा, ''मैं विश्व विजयी हूँ सब कुछ मेरे पास है, बोल तू क्या चाहता है?'' साधु ने मस्ती में उत्तर दिया, ''हट जा मेरे सामने से, धूप आने दे।'' कितनी मस्ती है इस उत्तर में कि सिकन्दर की सब जीत धरी रह गयी। सदा तनावमुक्त रहने के लिए जरूरी है, प्रसन्नता और किसी न किसी काम में सक्रिय रहना। एक अंग्रेजी कहावत है जिसका अर्थ है कि ^^rqe g¡lksxs rks lkjk lalkj rqEgkjs lkFk g¡lsxk vkSj ;fn rqe jksvksxs rks lalkj esa rqe vdsys jg tkvksxs** इसलिए हँसमुख होना जीवन का श्रेष्ठ वरदान है। दुःख के क्षणों में आँसुओं को मुस्कराहट में बदलने की कला हमें आनी चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है– ''दिन अच्छे–बुरे सब तुझे होंगे गुजारने, रोकर गुजार या इन्हें हँसकर गुजार दे।''

,dkxzrk

''हर हाल मगन रह रे बन्दे, हर हाल जतन कर रे बन्दे।'' जीवन की कितनी बड़ी उपलब्धि समाई है इन शब्दों में। हमें इस योग्य होना चाहिए कि हम अपने को काम में बिल्कुल भूल जाए। lc dqN Hkqykdj dke esa yx tkuk] tqV tkuk gh ,dkxzrk gS vkSj ;gh rYyhurk gS। कहते हैं कि किसी कार्य में डूब जाओ

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

न कि उसमें तैरते रहो। चाहे वह पूजा–पाठ हो या अन्य दैनिक कार्य। एक लोक कथा है कि एक प्रेमी अपने प्रेमिका के ध्यान में उससे मिलने जा रहा था। सड़क किनारे बैठा एक साधु ईश्वर का ध्यान कर रहा था। प्रेमी उस साधु से टकरा गया पर रुका नहीं, चलता रहा। साधु ने चिल्लाकर कहा– ''नालायक, मैं ईश्वर के ध्यान में डूबा हुआ था, तुमने मुझसे टकराकर मेरा ध्यान भंग कर दिया।'' प्रेमी ने कहा– ''हे साधु, मैं अपनी प्रेमिका के ध्यान में डूबा हुआ था। मुझे तुझसे टकराने की कोई सुध नहीं है, पर यह तो बता कि तेरा ईश्वर ध्यान कैसा है कि मुझसे टकराते ही तुम चौंक पड़े और बड़बड़ाने लगे।'' तो यह है डूबने और तैरने का अन्तर और स्वरूप। सफलता के मूल मंत्र के लिए जरूरी है ध्यान में डूब जाना।

vkRefo'okl

जीवन में कोई भी तब तक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक उसमें आत्मविश्वास न हो। कृष्ण ने महाभारत में यही किया कि पाण्डवों को उन्होंने आत्मविश्वास से भर दिया और कौरवों को आत्मविश्वास विहीन कर दिया। वह अपने कार्य के महत्व को समझते थे और पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने अर्जुन से कहा था– मैंने कौरवों को मार दिया है तुम इन मारे हुओं को मारो। परेशान मत हो, युद्ध करो तुम निश्चय रूप से युद्ध में अपने शत्रुओं पर विजय पाओगे। आत्मविश्वास से ही पाण्डुओं की जीत हुई। इसी प्रकार एक संदर्भ है नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का। जब वे आई.सी.एस. के साक्षात्कार में बैठे तो पूरी तेजी से घूमते हुए बिजली के पंखे की ओर इशारा करते हुए, उनसे पूछा गया, ''क्या इसकी पंखुड़ियाँ गिनी जा सकती हैं?'' सुभाष बाबू ने झट से पंखा बंद कर दिया और बोले, ''जी हाँ, सुगमता के साथ।'' इतना ही नहीं फिर एक बार उन्हें कसौटी पर कसा गया और अंगूठी उनके सामने रखकर पूछा गया क्या इसमें से सुभाष चन्द्र बोस पास हो सकता है? सुभाष बाबू ने अपने नाम का विजिटिंग कार्ड मोड़कर उसमें से पास करते हुए कहा ''जी, इस तरह''। यह है आत्मविश्वास जिसके अभाव में वह घबरा जाते और गलत जवाब दे देते। कहने का तात्पर्य है Hk;] vkRefo'okl dk 'k=q g vkj vkRefo'okl Hk; dk। आत्मविश्वास यदि होगा तो मंजिल दूर नहीं हागी।

vuHko

हमारे जीवन में अनुभव की एक अहम भूमिका है। कहते हैं जहाँ न जाए रवि, वहाँ जाए कवि और जहाँ न जाए कवि, वहाँ जाए अनुभवी। जीवन के लिए इससे अच्छी और कोई बात नहीं है कि हम हर जगह से अनुभव प्राप्त करते रहें। अपने व्यवसाय से, जीवन पर्यन्त किए जाने वाले कार्यों से tk Hkh vuk[kk vuHko ge iklr gkrk g] ogh gekjh ekjkgj g। अनुभव के आधार पर ही हम अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और इसी में हमारा वास्तविक उत्थान है। विश्वकवि रविन्द्रनाथ की पंक्तियाँ हैं ''मेरे प्रभु, मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूँ कि मुझे यह दो, वह दो। मैं तो यही प्रार्थना करता हूँ कि मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं उसमें आनंद उठा सकूँ जो मेरे पास है।'' क्योंकि चाह का घड़ा बड़ा विचित्र होता है वह एक बूँद से भी भर जाता है और पूरे समुद्र के पानी से भी नहीं भरता। यही बात मनुष्य में भी है कि यदि वह अपने में संतुष्ट है तो उसकी स्थिरता है अन्यथा वह हर समय तीन–पांच के चक्कर में घिरा रहता है।

le;

जीवन में ऊँचा उठने के लिए मस्तिष्क, धन और शक्ति के अलावा एक चीज का महत्व सबसे अधिक है और वह है ''lgh le; dh lgh ek;u e ij[k।'' अर्थात हर चीज का एक समय होता है, जैसे कोई काम करने का या नहीं करने का। इसी तरह से कोई बात कहने का या चुप ही रहने का। समय की परख जिसे हो गई जीवन में काफी कुछ उसने उसी वक्त जीत लिया। अधिकांश लोग समय को नहीं परख पाने से ही दु:खी बने रहते हैं, असफल रहते हैं। हमारे घर में लगी घड़ी, हाथ में बंधी घड़ी टिक–टिक के साथ हमें कुछ–न–कुछ कहती ही है, हम उसे सुने या नहीं सुने। व्यावहारिक रूप से कुछ उपलब्ध करने के लिए जरूरी है, समय को पकड़ने–परखने की कला सीखना। जीवन में जो लोग लगातार असफल होते हैं वह अक्सर प्रतिकूल परिस्थितियों को भला–बुरा कहने लगते हैं। असल में उनके सामने असली समस्या दुर्भाग्य की नहीं बल्कि समय को गलत समझने की होती है। घड़ी हमें वक्त को समझने, उसे मुट्ठी में कैद करने को कहती रहती है। जरूरी है कि हम वक्त की गरिमा को समझे और उसे परखने की कला का कौशल हासिल करें।

fu.k;&vfu.k;

निर्णय–अनिर्णय के झूले में झूलते रहना हमारी सबसे बड़ी कमी है। लोक कथा है कि राजा के सामने एक अपराधी लाया गया। राजा ने अपराध का विवरण सुना और दण्ड दिया– यह आदमी 25 कच्चे प्याज खाये या इसके सिर पर 25 डंडे लगाए जाएं। दण्ड का निर्णय राजा ने किया पर दण्ड का चुनाव स्वयं अपराधी को करना था। वह अपराधी दुविधा में पड़ गया और उसे कभी प्याज खाना कठिन लगता और कभी डंडे खाना सरल। दुविधा में कुछ देर झूलकर उसने निर्णय लिया कि मैं 25 प्याज ही खाऊँगा। 25 प्याज उसके सामने रख दिए, पर तीसरे प्याज में ही उसका सिर झल्ला गया और पाँचवें प्याज तक तो आँख–नाक से पानी बहने लगा। अपराधी ने हारकर हाथ जोड़े– ''सरकार, मैं प्याज नहीं खा सकता, आप डंडे ही लगवा दें। राजा के आदेश से सिपाही डंडा ले आया और तीसरे डंडे पर ही अपराधी के होश ठिकाने लगने लगे। बेचारे ने फिर हाथ जोड़े– ''सरकार, मैं डंडे नहीं खा सकता, प्याज ही खा लूँगा।'' बस इसी तरह वह अपना निर्णय बदलता रहा और उसने 25 प्याज तो खाए ही 25 डंडे भी उसे खाने पड़े। दुविधा के कारण ही वह सही निर्णय नहीं ले सका। कहावत भी है कि nfoèkk e nkuk x, ek;k feyh u jke। दुविधा से दिल कमजोर हो जाता है और कमजोर दिल से कोई काम पूरा हो ही नहीं सकता।

ifjJe

माइक्रोसॉफ्ट अध्यक्ष और कंप्यूटर की दुनिया के बादशाह बिल गेट्स से एक सवाल पूछा गया कि आखिर आपकी सफलता का राज क्या है? तो उसने कहा कि– मेरे पास ऐसा कोई गोपनीय कैप्सूल नहीं है जिससे कोई भी रातों–रात सफल हो सकता है। हाँ, एक ही चीज ऐसी है और वह है परिश्रम। परिश्रम के साथ सूझ–बूझ और उसे सही अन्जाम देना भी जरूरी है। बिना लगन और आस्था के किए गए काम में आमतौर पर सफलता भी नहीं मिलती। गांधी जी दक्षिण में जब पहली बार अदालत में वकालत के लिए खड़े हुए तो जज ने उनसे पूछा कि आपने पगड़ी क्यों नहीं उतारी? उन्होंने कहा, मुझे ऐसा करना अपने प्रति अपमान लगता है। यह कहकर वह अदालत छोड़कर चले गए। कुछ हिन्दुस्तानी दोस्तों ने उनसे कहा, ऐसे में तो आप मुकदमा हार जाएंगे। गाँधी जी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि मुकदमा मैं किसी भी कीमत पर नहीं हारूँगा। प्रवासी भारतीयों ने पूछा, इस विश्वास की वजह क्या है? गांधी जी ने कहा था– मेरा परिश्रम और मेरा मन। वास्तव में eu l fd;k x;k ifjJe dHkh vlQy ugh gkrk। एक नहीं अनेक मिसालें हैं, कई वैज्ञानिक कलाकार, खिलाड़ी और प्रोफेशनल इसके उदाहरण हैं। विवेकानन्द अपनी शिक्षाओं में कहते कि फुटबाल खेलने और भागवद्गीता पढ़ने को एक ही तरह का काम मानना चाहिए, अर्थात जो काम करें उसे पूरे मनोयोग और रचनात्मक दृष्टिकोण से करें। परिश्रम केवल भौतिक सफलता ही नहीं देता अपितु एक सोशल वैल्यू और एक सोशल आइडेंटीफिकेशन का काम भी करता है। परिश्रमी लोगों से हमेशा न केवल वे लोग खुश होते हैं जो उनके इर्द–गिर्द रहते हैं बल्कि ऐसे व्यक्तियों से दूर–दूर का वास्ता रखने वाले व्यक्ति भी खुश रहते हैं। परिश्रमी व्यक्ति की सामाजिक छवि हमेशा सकारात्मक होती है।

उपयुक्त सभी बातों में जीवन का एक मार्मिक अनुभव छिपा हुआ है। thou dk lkj rRo ;gh g fd ge ifjJe] ltxrk] vkRel;e] vk'kk] èk;l vkfn x.kk d feJ.k l thou thu dh dyk lh[k y vkj Hk;] nq[k] b";k] }"k] fpUrk vkfn vkoxk l cpu d fy, viu eukoxk ij dkc j[k। हम जिस भी व्यवसाय से जुड़े उसके बारे में हमेशा अपनी सकारात्मक सोच रखें और गीता के संदेश अनुसार कर्म पर विश्वास करते हुए फल की इच्छा न करें। भावी संभावनाओं का सही अनुमान लगाकर हम आशावादी बन सकते हैं तथा कल और अच्छा संदेश लेकर आएगा, इस आस्था के साथ आज को महत्वपूर्ण बना सकते हैं। जीवन की सार्थकता ही यही है कि हम मनुष्य की तरह जीना जानकर अपने जीवन–पथ का इस तरह उत्थान करें जिसे न कोई परिस्थिति और न कोई अन्य छीन सके। हमारा जीवन पहाड़ की चट्टान के समान एक स्थान पर ही नहीं बल्कि नदी का धारा के समान निरन्तर गति से चलता रहता है। साँसों के सितार पर निरन्तर रूप से बजने वाले जीवन रूपी गीत के स्वरूप पर गहराई से आत्ममंथन करने पर जीवन जीने की कला का भरपूर आनन्द उठाया जा सकता है।

अतः यह कहना युक्तिसंगत है कि जिंदगी जीना भी एक कला है और जो इस कला का आनंद लेना जानता है, उसके लिए यह बला हो ही नहीं सकती।

दूसरी दिल्ली

यास्मीन सैयद *

घर से दफ्तर के सफर के दौरान मुझे दो तरह की दिल्ली को देखने का मौका मिला ''आप कहेंगे यह कैसे हो सकता है दिल्ली तो एक ही है, परन्तु मैंने दूसरी दिल्ली भी देखी। एक दिल्ली तो है जो कि राष्ट्र की राजधानी है जिसमें सब सुख–सुविधाएं हैं, चौड़ी सड़के हैं, आलीशान दफ्तर और मकान हैं, बड़े–बड़े मॉल और शॉपिंग कॉम्पलैक्स हैं, बेहतर चिकित्सा सेवाएं हैं, अच्छी शिक्षा के लिए बढ़िया शिक्षण संस्थान हैं, वहीं एक दूसरी दिल्ली और है जिसमें रिक्शों की कतार है, जिसमें झुग्गी–बस्तियां हैं, जिसमें टूटे–फूटे मकान हैं, जिसमें संकरी गलियां हैं, जिसमें कचरा बीनता यौवन है, जिसमें भीख मांगता बचपन है।

मैंने देखा कि दोनों ही तरह की दिल्ली में सब अपने काम में इतने व्यस्त हैं कि किसी के पास समय ही नहीं है। जहां पहली दिल्ली बड़े–बड़े इरादों को पूरा करने में लगी है वहीं दूसरी दिल्ली अपने जीवन–निर्वाह के जुगाड़ में लगी है। जहां पहली दिल्ली हर क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है वहीं दूसरी दिल्ली अपनी आजीविका के लिए रोज संघर्ष कर रही है। जहां पहली दिल्ली विकास के मार्ग को अग्रसर है, वहीं दूसरी दिल्ली ने विकास क्या होता है देखा ही नहीं है। जहां पहली दिल्ली की जिन्दगी गाड़ियों के सहारे रफ्तार से भाग रही है, वहीं दूसरी दिल्ली में ज़िन्दगी रिक्शों और ठेलों पर रेंग रही है।

दोनों ही तरह की दिल्ली में बहुत अंतर है परन्तु दोनों ही एक–दूसरे की पूरक हैं। दूसरी दिल्ली के मजदूर ना हों तो पहली दिल्ली के विकास के प्रोजेक्ट में सहायक कौन बनेगा। दूसरी दिल्ली की घर में काम करने वाली मेड न हो तो पहली दिल्ली के शानदार और आलीशान दफ्तरों और मकानों का रख–रखाव कौन करेगा। दूसरी दिल्ली के रिक्शों की बदौलत ही पहली दिल्ली का व्यक्ति मैट्रो स्टेशन तक पहुंच पाता है। दूसरी दिल्ली के फल विक्रेता और सब्जी वाले के सहारे ही पहली दिल्ली के घर–घर तक फल और अच्छी सब्जी पहुंच पाती है। पहली दिल्ली के कारण ही दूसरी दिल्ली के लोगों को रोज़गार मिलता है और वहां रहने वालों का घर चल पाता है। किसी ने सही कहा है– हर गाड़ी के दो पहिये होते हैं, एक भी खराब हो तो दूसरा भी नहीं चल पाता है।

जब मेरी ऑफ़िस की बस पहली दिल्ली से गुजर रही थी तो खिड़की से मैंने बाहर देखा और पाया कि पहली दिल्ली के हर घर और दफ्तर में शानदार बड़ी–बड़ी खिड़कियां हैं और उन खिड़कियों पर बहुत ही सुन्दर और महंगे–महंगे परदे लगे हैं। मेरा जिज्ञासु मन यह सोचता है कि इन परदों के पीछे की जिंदगी कैसी होगी, शायद सब ऐश–आराम होता होगा, किसी चीज़ की कमी नहीं, खुशियां ही खुशियां होती होंगी। सब तरफ समृद्धि और सम्पन्नता बिखरी होती होगी, यह सब सोच मन में आशा होती है, काश हमें भी यह सब मिल जाए, हम भी जीवन खुशियों संग बिताएं।

सोच की तन्द्रा, बस के हॉर्न से टूटी तो देखा हमारी बस दूसरी दिल्ली में पहुंच गयी थी, बस के सामने सड़क पर खेलते–खेलते बच्चे अचानक से चले आए थे। मैंने देखा कि यहां संकरी–संकरी गलियां थीं, उन

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गलियों में गंदी नालियां थीं, छोटे–छोटे मकान जुगाड़ से बनाये हुए थे, बच्चे बाहर सड़क पर खेल रहे थे, कोई सरकारी नल से पानी भर रहा था तो कोई वहीं स्नान कर रहा था। कुछ औरतें घर के बाहर चूल्हे पर दिन का खाना बना रही थीं। कुछ अपने बच्चे को दूध पिला रही थीं। तब मैंने सोचा यहां तो सब काम सबके सामने हो रहे हैं, कोई किसी से कुछ छुपाता नहीं है, सरकारी जल सबकी सम्पत्ति है जो चाहे उसका उपयोग करे। क्या इन लोगों को परदों की ज़रूरत नहीं है। शायद इन लोगों के पास छुपाने को कुछ नहीं है, पर ऐसा नहीं है शायद इन लोगों को कुछ छुपाने की आदत ही नहीं है, छुपाना तो बड़े लोगों का शौक होता है।

पहली दिल्ली और दूसरी दिल्ली दोनों में ही बहुत असमानताएं होते हुए भी मैनें उनमें कुछ समानताएं पायीं। यह समानता है महंगाई की, बढ़ते भ्रष्टाचार की, महिलाओं पर रोज होते अत्याचार की, पैसे के लिए होते झगड़े और हत्याओं की, ट्रैफिक में फंसी एम्बुलैंस में दम तोड़ती ज़िंदगी की। आज हर दिल्लीवासी चाहे वो पहली दिल्ली में रहता हो या दूसरी दिल्ली में, सभी अपने घर की स्त्रियों की सुरक्षा के लिए आशंकित है, वो जेब कतरों, बदमाशों व भय से आतंकित है। किसी को नहीं पता कि कब उसका मोबाइल और पर्स चोरी हो जाएगा, चाहे वो मेट्रो में सवार हो या लोकल बस में। ना जाने कब किसी स्त्री का अपहरण हो जाए, ना जाने कब घर में घुसकर हत्या हो जाए। ये सारी समस्याएं दोनों ही तरह की दिल्ली में व्याप्त हैं।

पहली दिल्ली के लोग अपने–आप में इतना सामर्थ्य रखते हैं कि वह अच्छे जीवन–यापन के सभी साधन जुटा सकें। परन्तु, दूसरी दिल्ली के दयनीय स्थिति के लिए यहां रहने वाले लोगों की मजबूरी, उनके हालात और उनकी आदत जिम्मेदार है। दूसरी दिल्ली की मजबूरी यह है कि इन लोगों के पास अच्छा जीवन यापन करने के लिए पर्याप्त साधन नहीं हैं। अशिक्षा, गरीबी और अधिक जनसंख्या की वजह से ये लोग आगे नहीं बढ़ पाते हैं। शराब पीना, जुआ खेलना और नशे की आदत की वजह से ये लोग ऐसे ही जीने को मजबूर हैं।

सरकार दूसरी दिल्ली के लिए बहुत सी योजनाएं बनाती है पर ये लोग उन योजनाओं का भी पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं। सरकार ने ''राजीव गांधी आवास योजना'' के अंतर्गत झुग्गी बस्तियों में रहने वालों को घर बना कर दिये पर ये लोग घरों को किराये पर चढ़ाकर फिर झुग्गी बस्तियों में ही रहने चले जाते हैं। दूसरी दिल्ली के लोग दिन भर मेहनत करने के बाद प्राप्त राशि को शराब, जुए और नशे के साधनों से व्यर्थ कर देते हैं। प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क होने के बावजूद भी ये अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते हैं, जबकि स्कूल में मीड–डे–मील योजना के तहत बच्चों को खाना भी दिया जाता है। इन सब की ऐसी स्थिति के लिए कौन जिम्मेदार है, देश की सरकार या यह स्वयं ? ये लोग खुद ही अपना भविष्य अंधकारमय बनाते हैं।

यही सब सोचते–सोचते हमारी बस ऑफिस पहुंच जाती है। तभी मेरे मन में एक विचार आता है कि मैं और मेरे जैसे और भी कई लोग, किस दिल्ली के निवासी हैं? ना हमारे पास सारे ऐश–आराम हैं, ना ही बड़ी गाड़ियां और आलीशान कोठियां हैं और ना ही हम झुग्गी बस्ती के लोगों की तरह विवश हैं। क्या हम जैसे लोगों के लिए एक ''तीसरी दिल्ली'' और है ?

कर्म ही पूजा है

प्रकाश चन्द्र मैठाणी*

दुनिया में अध्यात्म या धर्म की कहीं कमी नहीं दिखाई देती है। पूरे जगत में धर्म, साहित्य, धर्म स्थलों, धर्म अनुष्ठानों की भरमार है। जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा धर्म के विस्तार में लगा है। हर किसी की धर्म से बड़ी आशा है। सबके जीवन में इसका बड़ा महत्व है। यह सब देखकर लगता है कि दुनियां में धार्मिकता ही धार्मिकता होनी चाहिए पर ऐसा कहीं नजर नहीं आता। चारों तरफ अधार्मिकता का प्रभाव दिखाई देता है। यानि कि प्रयास बहुत हैं, लेकिन परिणाम शून्य के बराबर है।

यदि क्रियाओं को ही धार्मिकता माना जाए तो धार्मिकता बहुत है। लेकिन जीवन में पवित्रता शक्ति, शान्ति, निडरता, समभाव, आदि गुणों को धार्मिकता माना जाए तो धार्मिकता का नितान्त अभाव है। इसका मतलब यह है कि कुछ–न–कुछ गलत हो रहा है। इतने प्रयास क्यों व्यर्थ जा रहे हैं।

यदि कर्म को ही धर्म समझ लिया जाए तो यह दुनिया धार्मिक हो सकती है और आगे भी सब कुछ ठीक हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति नौकरी करता है और अपना कार्य ईमानदारी से करता है, अपने साथियों से अच्छा व्यवहार रखता है, समय का पालन करता है तथा जहां काम करता है उस संस्था की उन्नति में अपना पूरा योगदान देता है और साथ में अपने घर, परिवार की खुशियों का पूरा ध्यान रखता है। यदि वह व्यक्ति अलग से कोई धार्मिक गतिविधि नहीं करता है तो वह धार्मिक एवं सहृदय है या नहीं इसे आप खुद समझ सकते हैं। इसी प्रकार कोई व्यवसायी अपना कारोबार पूरी ईमानदारी से करता है, अपने ग्राहकों से बहुत ही अच्छा व्यवहार रखता है, उनके लाभ की सोचता है, अपने कारोबारी साथियों के साथ नीति से कार्य करता है तथा अपने कर्मचारियों से सद्भावना रखता है, तो वह निश्चय ही धार्मिक है।

इसी प्रकार एक डाक्टर सेवा–भावना से कार्य करता है। मरीजों से दवा के साथ–साथ प्यार से बातें करता है, उनको वस्तु न समझकर इन्सान समझता है, उनकी तकलीफ दूर करने में पूरी रुचि रखता है, तो वह धार्मिक है। यदि व्यक्ति अपने जीवन की हर गतिविधि ईमानदारी से करे व अलग से कोई धार्मिक गतिविधि न भी करे तो वह धार्मिक क्यों नहीं है? निश्चित रूप से वह धार्मिक है वह अपने कार्य में दूसरों के मुकाबले सफल भी अधिक होगा। सुख और आनन्द भी उनके जीवन में अधिक होगा, लेकिन वास्तविकता में इस तरह के लोग कम देखने में मिलते है, हर किसी में गलत प्रवृत्तियाँ घर कर लेती हैं, हर कोई अंहकार, क्रोध, लालच, ईर्ष्या आदि के वशीभूत हो जाता है। किसी में विकार ज्यादा भी हो सकते है पर इन विकारों को दूर करने के लिए हम धार्मिक या अध्यात्मिक केन्द्रों का निर्माण करते है ताकि वहां बैठकर इन्सान कुछ गतिविधि करके अपने जीवन के असली स्वभाव का स्मरण कर सके और अपनी आत्मा के अध्याय को पढ़ सके, यहां से पनपे सद्विचार उनके जीवन की गतिविधियों में शामिल हो सकें और यहां से विकसित आभा उनके जीवन में प्रकाश भर सके।

ऐसा कुछ हो रहा हो तो ठीक है, पर ऐसा कुछ दिखाई नहीं देता। आदमी ने इन गतिविधियों को अलग–अलग कर दिया है। धर्म के लोगों ने अपना धन्धा बना लिया है। धर्म को जो लाभ मिलना चाहिए, वह नहीं मिल पा रहा है, बल्कि इससे और नुकसान हो रहा है, आदमी तो यह समझ रहा है कि मैं पूजा–पाठ, कर्मकाण्ड, दान, पुण्य, ध्यान साधना जितना ज्यादा करुंगा उतना ही लाभ ज्यादा होगा, उतना ही पुण्य का खाता ज्यादा होगा, जबकि वास्तव में उनको यह पता नहीं कि यह भीतर की यात्रा है, यह विकारों को दूर कर सही इन्सानियत का विकास करने की यात्रा है। आदमी भीतर तक पहुंच ही नहीं पाता और वह क्रियाओं में ही उलझा रहता है। धर्म के मूल उद्देश्य से पूरी तरह मनुष्य भटक चुका है। इसलिए जीवन में नारकीयता बढ़ती जा रही है। आदमी से आदमी का रिश्ता टूटता जा रहा है। भीतर से प्रेमरस पूरा खाली हो चुका है, आत्मबल नष्ट हो चुका है, साहस की कमी हो गयी है, खुद की सत्ता पर विश्वास नहीं है।

आज बड़ा आश्चर्य होता है जबकि आदमी बड़े–बड़े प्रसिद्ध गुरूओं से, उनकी संस्था से अपने को जुड़ा कहता है, लेकिन वह अहंकार, क्रोध जैसे ज्वालामुखी की तरह भरा हुआ है, नफरतों का समंदर भीतर समेटे हुए, अपने आप से डरा हुआ, किसी एक के साथ भी ठीक से अपना रिश्ता बना नहीं पाता। प्रेम

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

को तो जीवन में जैसे कहीं स्थान ही नहीं। कई लोग कहते हैं कि मैं बहुत अध्यात्मिक प्रवृत्ति का आदमी हूँ। परन्तु उनकी वाणी में वह मिठास नहीं आती, उनके भावों में प्रेम कहीं नजर नहीं आता, वह मानसिक रूप से बड़े विचलित से नजर आते हैं, वह व्यावहारिक जीवन में असफल हो चुके होते हैं, तब बात समझ में नहीं आती कि उन्होंने कौन से अध्यात्म को पकड़ा है। यह सब इसलिए हो रहा है कि हम अध्यात्म का मतलब नहीं समझ रहे हैं। अध्यात्म इन्सान को कमजोर नहीं बल्कि शक्तिशाली बनाता है, वह उसके जीवन को सच्चे आनंद से भर देता है। आध्यात्मिक इंसान कभी किसी से कुछ नहीं मांगता, वह तो हमेशा दूसरों के हित की बात सोचता है। सही धर्म तब होगा जब धर्म के लिए अलग से कुछ करने की आवश्यकता खत्म हो जाएगी, धर्म का प्रभाव जीवन पर इतना हो जाएगा कि हर पल इन्सान धार्मिक रहे, हर पल उसे अपनी पवित्रता का अहसास हो, हर कर्म में, हर विचार में, हर आचरण में, धार्मिकता घुल जाए। अपनी आत्मशक्ति द्वारा स्वयं का व इस जगत का कल्याण करने में जुटना ही आत्मा का अध्याय है, यही सच्चा धर्म है।

जीवन दर्शन पर जितनी भी चर्चा की जाए, वह कम ही है। जब तक इन्सान की भूमिका अदा नहीं होती तब तक सब चर्चा, ज्ञान व्यर्थ है और यदि मनुष्य स्वयं की भूमिका को समझ ले तो एक इशारा काफी है। किसी मत से सहमत होने, किसी के प्रति समर्पित हो जाने पर किसी मार्ग को अपनाने मात्र से कोई यह समझ ले कि मैं अब सत्य मार्ग पर चल रहा हूँ तो यह भ्रम भी हो सकता है, यदि इस मार्ग पर प्रेम–भाव बढ़ रहा है, आनंद बढ़ रहा है, निर्भयता बढ़ रही है, विकार दूर हो रहे, आत्मविश्वास बढ़ रहा है और आप हर स्थिति में स्थिर चित्त रहने में सक्षम होते जा रहे हैं तो तब ही समझा जाएगा कि हम सही मार्ग पर चल रहे हैं। यदि अच्छाई के साथ कुछ बुराईयां भी पनपती जा रही हैं, विकारों पर काबू नहीं हो पा रहा है, जीवन में आनंद की अनुभूति नहीं हो पा रही है तो यह स्पष्ट समझा जाएगा कि हम कहीं न कहीं कोई न कोई गलती कर रहे हैं और हमें कुछ बदलाव लाने की जरूरत है। आज मानस भीड़ को देखता है। भीड़ अमुक कार्य कर रही है तो वह ठीक है, इस सोच से मुक्त होना होगा और आत्मा की पुकार सुननी होगी। परीक्षण स्वयं करना होगा। जीवन पथ कठिन नहीं है, जीवन पथ जटिल भी नहीं है, कुछ जटिलताओं को जीवन से बाहर निकालना है बस। जीवन और आनंद के अंतर को हटाना है और आनन्द को जीवन में पर्यायवाची बनाना है।

विद्या का अहंकार

y?k dFkk

एक बौद्ध ब्रह्मचारी था, अवस्था बीस वर्ष की होगी। चतुर तो था ही ज्ञानार्जन में भी कुशल और तत्पर था। वह अपनी प्रशंसा के लिये अनेक कलाओं का अभ्यास करना चाहता था और एतदर्थ वह कई देशों में घूमता रहा। एक व्यक्ति को उसने बाण बनाते देखा और उससे बाण बनाने की कला सीख ली। इसी प्रकार एक दूसरे देश में जाकर उसने जहाज बनाने की कला सीख ली। एक तीसरे देश में जा कर गृह निर्माण कला भी सीख ली। इसी प्रकार वह सोलह देशों में गया और वहां से अनेक कलाओं का विशारद हो कर लौटा। वह अपने देश में पहुंचा तो प्रायः अहंकार से लोगों को पूछ बैठता– पृथ्वी पर है मुझ जैसा कोई चतुर व्यक्ति। भगवान बुद्ध को इस युवा ब्रह्मचारी की दशा पर दया आई। उन्होंने उसे एक उच्चतर कला सिखानी चाही। वे एक साधु का वेष बनाकर हाथ में भिक्षा पात्र लिए उसके सामने उपस्थित हुए।

''कौन हो तुम?'' ब्रह्मचारी ने बड़े अभिमान से पूछा। 'मैं आत्मविजय का पथिक हूँ', भगवान ने कहा– 'क्या अर्थ है तुम्हारे इस कथन का। 'इषुकार बाण बना लेता है, नौचालक जहाज पर नियंत्रण रख लेता है। गृहनिर्माता घर भी बना लेता है। पर यह तो महान विद्वान का ही कार्य है जो अपने शरीर पर, मन पर नियंत्रण रख सके, आत्मविजय पा सके।' 'किस प्रकार?' युवक ने प्रश्न किया।

यदि संयम उसकी प्रशंसा के गीत गाता है और उसका मन शान्त स्थिर है। यदि संसार उसे गाली देता है और तब भी उसका दिल दिमाग ठीक रहता है तो ऐसी योग्यता वाला साधक ही शांति तथा निर्वाण को प्राप्त करता है न कि प्रशंसा का 'इच्छुक', उत्तर था भगवान का। ब्रह्मचारी का अहंकार समाप्त हो चुका था और वह नतमस्तक हो चुका था भगवान बुद्ध के चरणों में।

धरती के दो अनमोल रत्न

रेखा दुबे*

बचपन से आज तक रात में खिड़की से चांद को देख कर सोना और सुबह सुर्ख लाल सूरज को निकलते हुए देखना मुझे बेहद भाया है। चांद और सूरज को निहार कर जीवन के कई अनमोल पलों को जिया है मैंने। बचपन में चंदा मामा की कहानी सुनकर कई रातों को सुकून की नींद ली है तो उगते हुए सूरज ने जीवन में ऊर्जा का संचार किया है। लेकिन तब कभी नहीं सोचा कि ईश्वर ने धरती पर भी तो चांद और सूरज दिए हैं। सूर्यास्त के बाद अक्सर रातों में एक ही ख्याल आता है कि चांद को मामा क्यों कहा जाता है। हम सभी जानते है कि ''मामा'' शब्द में दो बार ''मा'' शब्द का प्रयोग होता है अर्थात् मामा में दो–दो मा हैं। शब्दों की गहराई देखिए मामा का प्यार भी मां जैसा ही नरम होता है। चांद को शीतलता का प्रतिबिंब कहा जाता है और मां का स्नेह भी ठंडी छॉव की तरह जीवन के कठिन पलों को आसान बना देता है। प्रकृति के दो अनमोल रत्न आसमान में हैं तो दो जमी पर। वैसे तो जीवन में कई रिश्ते महत्वपूर्ण हैं लेकिन माता–पिता का रिश्ता अनमोल है। मां का रिश्ता हमारी जिंदगी का सबसे अहम, अनोखा और अमूल्य है क्योंकि बाकी सारे रिश्ते हमें जन्म के बाद मिलते हैं लेकिन एक मां ही है जिससे हम जन्म लेने से नौ महीने पहले ही जुड़ जाते हैं और दूसरा खास रिश्ता पिता का है। हमने जब धरती पर पहली सांस ली तो जो दूसरा स्पर्श हमने पाया वो हमारे माथे पर पिता का हाथ ही था। कहा जाता है कि बेटियां अपने पापा से ज्यादा प्यार करती हैं क्योंकि वो जानती हैं कि वही दुनिया के पहले और आखिरी पुरुष है जो उन्हें कभी तकलीफ नहीं देंगे और ये जीवन का अकाट्य सत्य है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। जैसे मां ठंडी छांव है तो पिता उजाले का प्रतीक, ऊर्जा का संचार करने वाले, और अनुशासन से हमारे जीवन को दुर्लभ बनाने वाले। मैंने अपने जीवन में बाबूजी की तुलना हमेशा सूरज से की क्योंकि मेरे जीवन में मां ने अपने प्यार की ठंडक दी तो बाबूजी ने रोशनी। मैंने जीवन के कई ऐसे पाठ उनसे सीखे जो शायद किसी भी किताब में नहीं और अक्सर मैं उनकी कही बातें याद करती हूं तो आज भी जीवन की कई परेशानियां छूमंतर हो जाती है। काश ईश्वर ने हमारे जीवन के ये चांद–सूरज हमें हमेशा के लिए दिए होते तो जीवन के इस सूर्यास्त का सामना किसी को न करना पड़ता।

जीवन अनुशासित है तो सफलता के दर्शन दुर्लभ नहीं और सूरज के अनुशासित रूप से हम सभी परिचित हैं। घर में परिवार के मुखिया का आगमन भी अनुशासन लाता है, ये मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। बचपन में बाबूजी के आने से पहले ही हम सभी भाई–बहन अपनी मस्ती खत्म कर किताबें लेकर बैठ जाते थे किसी डर की वज़ह से नहीं बल्कि पढ़ाई का मन लेकर और उस समय घर में ऐसा शांति का माहौल होता था कि एक घंटे में ही सारे पाठ याद हो जाते थे। जीवन में अनुशासन कितना महत्वपूर्ण है ये उन्हीं से सीखा। हमें सही राह दिखाने वाले कभी गलत नहीं होते अगर उनसे गलत फैसले हो भी जाएं तो उनकी नीयत साफ होती है..... और उन्हीं की दुआओं से तकदीरें बदल जाती हैं। मेरा मानना है कि

Ekj gkFkk dh ydhjk e tk Hkh fy[kk g
ejs ek&cki dh nvkvk dk vlj gA

अक्सर ये कहा जाता है कि पहला प्यार भुलाया नहीं जाता फिर पता नहीं क्यों लोग अपने माता–पिता को भूल जाते हैं? हर बच्चा सबसे पहले अपने मां–बाप से ही प्यार करता है। ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं हो सकता इसलिए धरती पर मां–बाप उसी का रूप है। हम तीर्थयात्रा पर अक्सर जाने का प्रोग्राम बनाते हैं लेकिन घर बैठे तीर्थ का सुख नहीं लेते।

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मुझे किसी दोस्त का एसएमएस मिला कि पिता ने बेटी से पूछा कि तुम मुझे ज्यादा प्यार करती हो या अपने पति से। बेटी बोली पता नहीं पापा लेकिन जब मैं उन्हें देखती हूं तो मुझे आपकी याद आती है लेकिन जब आपको देखती हूं तो उन्हें भूल जाती हूं। कई बार ये छोटी–छोटी बातें भी जीवन के कई ऐसे अनछुए लम्हों को जीवंत कर देती है जिन पर हम कभी गौर नहीं करते। जीवन में बहुत सारे रिश्तों का होना जरूरी नहीं लेकिन रिश्तों में जीवन का होना बेहद जरूरी है। हर बच्चा सबसे ज्यादा करीब अपने माता–पिता के साथ ही होता है और होना भी चाहिए क्योंकि सुकून भी उन्हीं की छत्रछाया में मिलता है और जब ये छत्रछाया खो जाती है तो ये शरीर बिना आत्मा के जैसे महसूस होने लगता है।

eq>s I;kj gS vius gkFkksa dh lc mxfy;ksa ls]
u tkus dkSu&lh mxyh idM+ ds ckcqth us
pyuk fl[kk;k gksxkA

पर अब वो हाथ मेरे साथ नहीं है लेकिन इन उंगलियों पर आज भी उनका स्पर्श मैं महसूस करती हूं। मेरे जीवन का सूर्य तो अस्त हो गया लेकिन उनकी दी रोशनी आज भी मेरे जीवन में उजाला भरती है। अपने जीवन के चांद–सूरज को सम्मान दीजिए क्योंकि

uhan viuh xaok ds lqyk;k gS gesa]
vkalw viuk ih ds galk;k gS gesa]
nnZ dHkh u nsuk mUgsa gfLr;ksa dks]
Åijokys us èkjrh ij tUur cuk;k gS ftUgsaA

उन घरों में हमेशा बरकत रहती है जहां माता–पिता के चरण बसते हैं इसलिए अपने जीवन के चांद–सूरज को संजो कर रखिये क्योंकि जब ये नहीं होते तो जीवन में शीतलता के साथ रोशनी भी नहीं रहती। मैं अपने सूरज के लिए बस इतना ही कहूंगी कि

;a Rkks lc dqN ekStwn gS ;gka ij]
Ikj vkidh deh [kyrh gS] vkids cxSjAA

माँ तू ही तो है मेरी

साहिल आसीवाल*

माँ तू ही तो है मेरी,
ओ माँ तू ही तो है मेरी
मुझको अपने आँचल में भर लेती,
भर लेती दर्द में होकर भी
तू खुशी मुझको देती
माँ तू ही तो है मेरी,
ओ माँ तू ही तो है मेरी
ये जीवन ये संसार तेरे बिना अधूरा है।
कैसे कहूँ कुछ नहीं तेरे सिवा है, तूने ही है
मुझको संभाला अपने आँचल में पल–पल पाला
प्यार तू मुझसे करती है दर्द मेरा समझती है।
तू ही तो है माँ मेरी
हर पल मुझको अपने सीने से लगाया
लोरी गाकर तूने गोद में सुलाया
अपना सारा प्यार मुझ पर है लुटाया
तू ही तो है माँ मेरी
भुलाऊँगा ना तुझे मैं कभी,
तूझसे ही तो मिली है ये जिंदगी
खुशियो का है ये मेला,
तुझको कभी ना होने दूंगा अकेला
तू ही तो है माँ मेरी
मेरा जग, मेरा जीवन, मेरी दौलत,
मेरी दुनिया सब तू ही है
अगर तू ही ना हो मेरी जिंदगी में,
तो बिन तेरे ये जिंदगी अधूरी सी है।
खुदा ने भी तुझको चुना है,
वो भी प्यार का प्यासा है।
उसे भी माँ की चाहत है।
क्योंकि तू ही तो माँ सबकी
खुद को यूं तन्हा करके तूने ये जिंदगी गुजारी है।
सारी खुशियां बस मुझ पर वारी हैं।
तू ही सबसे प्यारी है माँ मेरी

* पुत्र श्री जे.पी. आसीवाल, कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगमित कार्यालय द्वारा हास्य

राजभाषा हिन्दी को प्रोत्साहत करने एवं सांस्कृतिक उत्थान के उद्देश्य से केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा दिनांक 18.09.2014 को पीएचडी चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के लक्ष्मीपति सिंघानिया ऑडिटोरियम में राजभाषा अनुभाग के सौजन्य से 'हास्य कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री पवन कान्त, महाप्रबन्धक (कार्मिक) ने किया। श्री वी.आर. गुप्ता, निदेशक (वित्त) एवं श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) और गणमान्य कवियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर सम्मेलन की शुरुआत की। श्री जे.एस. कौशल और श्री वी.आर. गुप्ता ने कवि डॉ0 विष्णु सक्सेना, डॉ0 प्रवीण शुक्ला, श्री चिराग जैन, श्री महेंद्र शर्मा, सुश्री मुमताज नसीम, श्री चरणजीत चरण और श्री बलवंत रंगीला को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। निदेशक (वित्त) ने सभागार में उपस्थित सभी श्रोतागणों को निगम की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि इस वर्ष निगम द्वारा आयोजित यह दूसरा कवि सम्मेलन है। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम में निगम के प्रबंध निदेशक श्री बी.बी. पटनायक हमारे प्रेरणास्रोत रहे और उन्होंने इस सम्मेलन के आयोजन में दिल से सहयोग दिया। श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने अपने स्वागत भाषण में सभागार में उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि आप सभी के उत्साह को देखते हुए निगम भविष्य में भी बड़े पैमाने पर इस प्रकार का आयोजन करता रहेगा। कवियित्री मुमताज नसीम के मधुर स्वरों में गाई गई सरस्वती वंदना ('हे सरस्वती मां, हे सरस्वती मां। तेरे चरणों में अर्पण मेरे दो जहां') ने ऑडिटोरियम में उपस्थित श्रोतागणों का मन मोह लिया। कवि सम्मेलन का संचालन युवा कवि श्री चिराग जैन ने किया। उन्होंने हास्य के माध्यम से बदलते परिवेश पर कटाक्ष करते हुए श्रोतागणों को गद्‌गद् किया। कवि चरणजीत चरण ने अपनी ओजस्वी कविताओं से लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना का संचार किया। उन्होंने आजादी में शहीद हुए उन तमाम देश भक्तों की याद दिलाई जिन्हें इतिहास में कोई पहचान नहीं मिली थी। शहीदों को उन्होंने कुछ इस अंदाज में श्रद्धांजलि दी–''करके तमाम जिंदगी की नींद कुर्बान, कितने ही सपनों को हार से बचा लिया। जीवन के सारे वैभवों को तज दिया पर, नई नस्लों को अंधियारे से बचा लिया।'' वहीं, कवियित्री मुमताज नसीम ने अपनी कविताओं में श्रृंगार और वीर रस को अद्‌भुत रूप से प्रस्तुत कर समां बांध दिया। उन्होंने सादगी भरे अंदाज में एक प्रेमिका की स्वीकारोक्ति श्रोताओं के सामने रखी, 'आज इकरार कर लिया हमने, खुद को बीमार कर लिया हमने। अब तो लगता है जान जाएगी, तुमसे जो प्यार कर लिया हमने।' अपनी कविता के माध्यम से उन्होंने कश्मीर पर आम भारतीय के रुझान को सामने

कवि सम्मेलन का आयोजन

रखा। इन कविताओं में कश्मीर के लिए प्रत्येक भारतीय के दर्द की कहानी छुपी थी। वरिष्ठ कवि बलवंत रंगीला ने राजनेताओं पर करारी चोट की।

कवि चिराग जैन ने महिलाओं के सम्मान की भावना के लिए जो ब्यां किया, उसने सभी के दिलों को छू लिया। उन्होंने जहां एक ओर हास्य रस को श्रोताओं के बीच बिखेरा, वहीं दूसरी ओर यह संदेश भी दिया कि मां–बाप को अपने बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि वह लड़कियों को सदैव सम्मान दें। एक बेटे का अपनी अनपढ़ मां को लेकर क्या नज़रिया है, उसे भी कवि चिराग ने बहुत खूबसूरत अंदाज में पेश किया, 'मेरी अनपढ़ मां, वास्तव में अनपढ़ नहीं है। वो पिताजी का चेहरा पढ़ लेती है।' कवि डॉ0 प्रवीण शुक्ला ने मौजूदा एकल परिवार और परिवार में बढ़ते बंटवारों पर करारा आघात किया। उन्होंने अपनी कविता के जरिए युवा पीढ़ी को मां–बाप का सम्मान करने की नसीहत दी, जिसने श्रोताओं का मन मोह लिया, उनकी पंक्तियां कुछ इस तरह थीं, 'जिस घर ने पाल–पोसकर तुमको बड़ा किया, बांटो मत उसके आंगन को दीवार की तरह।' डॉ0 विष्णु सक्सेना ने भी श्रृंगार रस की चाशनी से लबालब कविताएं श्रोताओं के सामने रखीं। एक प्रेमी के निवेदन को उन्होंने कुछ इस तरह शब्द दिए, 'तू हवा है तो कर ले, अपने हवाले मुझको। इससे पहले कोई और बहा ले मुझको।' इसके साथ ही उन्होंने इन पक्तियों से श्रोताओं को अपना बना लिया कि ''ये मानता हूँ कि मैं दौलत कमा नहीं सकता। मगर तुम्हारा हर एक गम खरीद सकता हूँ।''

अंत में निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल ने कविगणों को आमंत्रण स्वीकार करने एवं श्रोताओं का मनोरंजन करने के लिए आभार प्रकट किया तथा निगम परिवार के सदस्यों का भी इस कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए शुक्रिया अदा किया। उन्होंने सभी की भागीदारी एवं सहयोग से इस कार्यक्रम की सफलता पर बधाई दी।

हास्य कवि सम्मेलन हंसते–मुस्कराते चेहरों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

कृष्णा को दिल्ली आने का न्यौता

के.सी.एस. नेगी*

आप जा रहे मथुरा वृंदावन
कृष्णा को मेरा नमन कहना
उन्हे दिल्ली आने का
न्योता भी देते आना
और कहना यदा–यदा ही धर्मस्य
आप ही ने कहा था.
अब आ गया वह समय
अपना वादा पूरा करना
आपके द्वापर वाली गीता क्योंकि
लगता है पुरानी हो गयी
दिल्ली में अब बेशर्मी बढ़ गई
सन्त भी सन्तई छोड़ रहे
उनके काले कारनामों से
पूरा अखबार भरा रोज छप रहा
कृष्णा अब दिल्ली आ जाओ
माना कि अब द्वापर युग नहीं
लेकिन जमुना अभी है यहां
अपने में दिल्ली की गंदगी समाये
नदी से नाला बन गई वह
उसकी यह हालत देखकर
नहीं पहचान पाओगे आप
लेकिन यह कटुसत्य है कृष्णा
कि यह वही जमुना है
जिसमें कालिया नाग को आपने नचाया
ग्वाल बालों के साथ जमुना किनारे
मुरली की धुन से सबको हरसाया
अब वही जमुना तुम्हें बुला रही
कृष्णा तुम दिल्ली आजा ओ
लेकिन इन बातों का
ध्यान में नहीं लाना कृष्णा
कि यहां कोई कदम्ब का पेड़ होगा
और गायें, ग्वाल, बाल व गोपियाँ होंगी
यहां बहुमंजिलें इमारत हैं सिर्फ
कंक्रीट के जंगलों का विहंगम दृश्य
जिन्हें निहारने भी जरूर
कृष्णा दिल्ली जल्दी आना
सच है यहां वो माखन तो नहीं
परनार्वे, स्वीडन के पाउडर का
बना दूध, दही, लस्सी, माखन
चखने भी दिल्ली ज़रूर आना
दिल्ली की जनता का आतुर
बस अब इतना बढ़ गया
आपके कदमों का बस
इन्तजार भर है
कृष्णा अब दिल्ली तुरंन्त आना
कृष्णा तुम बांसुरी की धुन पर
सबको सन्मति देने आना
कृष्णा तुम दिल्ली ज़रूर आना

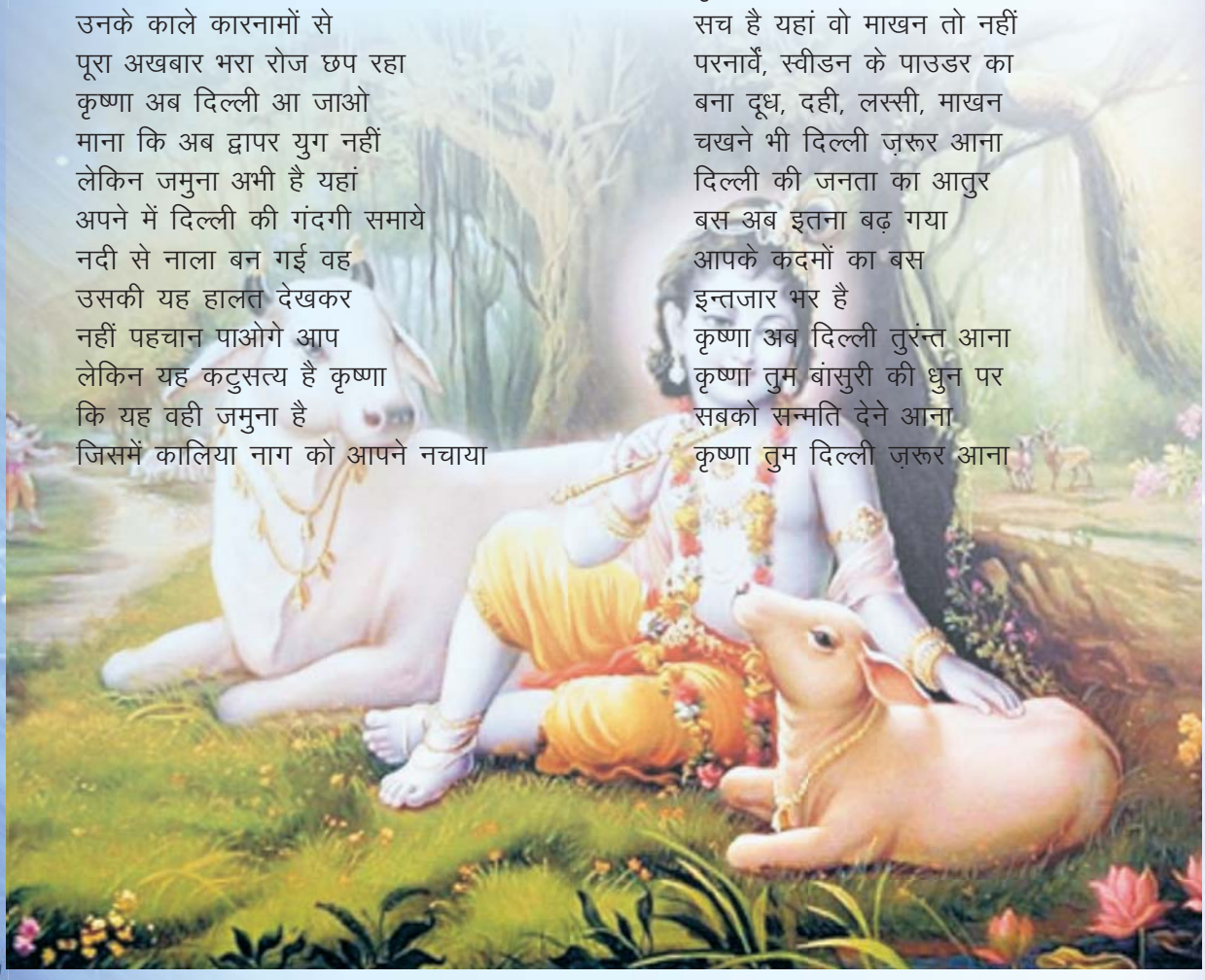

* भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

बदलता जमाना

विजयपाल सिंह*

गुप्ता जी के घर पर लोगों का तांता लगा हुआ है, लगे भी क्यों नहीं, गुप्ता जी की शादी को लगभग 20 वर्ष हो चुके थे, मगर अभी तक उनकी पत्नी की गोद सूनी ही थी। भगवान की कृपा से आज उनकी पत्नी की गोद भरी है और वो भी लड़के से। गुप्ता जी के सभी रिश्तेदार आकर दोनों को बधाईयां दे रहे हैं। यहाँ तक कि जो रिश्तेदार कल तक गुप्ता जी की पत्नी से नफरत करते तथा मुंह के पीछे उसे बांझ कहते थे वो भी आज खुशी–खुशी गुप्ता जी से लड्डू की फरमाईश कर रहे हैं।

एक बार गुप्ता जी की बहन जब अपने भाई के यहाँ आई तो उसने गुप्ता जी की पत्नी, यानि अपनी भाभी के हाथ का पानी भी नहीं पिया, और बांझ कह कर उसका अपमान किया था। यहाँ तक कि गुप्ता जी भी अपनी पत्नी से नफरत करने लगे थे शायद वे भी अपनी पत्नी को ही दोषी मानते थे। मगर उनकी पत्नी सुशील और सहनशील थी और वह जानती थी कि इस कलंक को मिटाना उसके हाथ में नहीं है, वह तो भगवान ही मिटा सकता है। गुप्ता जी व उनकी पत्नी ने शायद ही कोई धार्मिक स्थल छोड़ा होगा जहाँ सन्तान प्राप्ति के लिए मन्नत न मांगी हो। मगर होता तो वही है जो भगवान को मंजूर होता है।

गुप्ता जी की पत्नी को शादी के बीस साल बाद पुत्र की प्राप्ति हुई। घर पर दोस्त रिश्तेदार खुशी का इजहार कर रहे हैं। उधर गुप्ता जी ने अपने दोनों हाथों से दान देना भी शुरू कर दिया है। गुप्ता जी की वही बहन जिसने कभी भाभी के हाथ का पानी तक नहीं पिया था वह भी अपनी भाभी के साथ दुलार कर रही है, और कह रही है भाभी जी भतीजा हुआ है अब तो आपसे हीरों का हार लूंगी? तभी गुप्ता जी आ जाते हैं और कहते हैं हीरों का हार तो बहुत छोटा है आज कुछ और भी मांगती तो मैं वह भी दे देता।

समय बीतता जा रहा था। बच्चा होने के लगभग पांच साल के बाद गुप्ता जी की पत्नी को टी.बी. हो गई, टी.बी. काफी पुरानी थी, काफी इलाज के बाद भी वह ठीक नहीं हो पाई। गुप्ता जी की पत्नी का देहान्त हो गया। गुप्ता जी अपनी पत्नी के बिना टूट से गए। दूसरी शादी के बारे में वे सोच भी रहीं सकते थे। ऐसी स्थिति में बच्चे का पालन–पोषण करना आसान नहीं था। भला हो गुप्ता जी के अधिकारी का जिन्होंने गुप्ता जी को समय से पहले ही घर जाने की आज्ञा दे देते थे। गुप्ता जी ने अपने बच्चे को माँ की कमी कभी भी महसूस नहीं होने दी। गुप्ता जी ने बहुत मेहनत से अपने बेटे को पाला–पोसा और बड़ा किया। गुप्ता जी ने अपनी मेहनत की कमाई बेटे पर लगा दी और बेटा पढ़–लिख कर डॉक्टर बन गया और उसने अपना एक क्लीनिक खोल लिया। गुप्ता जी से अब घर का काम नहीं हो पाता था, करें भी कैसे बुढ़ापा जो आ गया था। गुप्ता जी को अब एक ही चिन्ता थी कि जल्दी अपने डॉक्टर बेटे के लिए एक अच्छी पढ़ी–लिखी, सुन्दर सी बहू ले आएं।

कई जगह शादी की बातें चलतीं। आखिरकार ऑफिस के एक दोस्त की बेटी से बात पक्की होती है जो बी.एस.सी. थी। शादी की तैयारियां होने लगती है। शादी के समय गुप्ता जी को अपनी पत्नी की बहुत याद आई। उनकी आँखों में आँसू थे, सोच रहे थे काश, आज वो भी अपने डॉक्टर बेटे की शादी को देखती, जिसने इसकी प्राप्ति के लिए न जाने कितने कष्ट उठाए थे। शादी हो जाती है।

बेटे की शादी तो हो गई लेकिन गुप्ता जी अब भी घर के लगभग सारे काम करते थे। जो बेटे की शादी से पहले करते थे। शायद गुप्ता जी ने भी सुख भोगने के सपने देखे होंगे। गुप्ता जी नहीं जानते थे कि नए जमाने की लड़कियों पर पश्चिमी सभ्यता का इतना प्रभाव हो सकता है। गुप्ता जी तो यही सपने देख रहे थे कि एक दिन बहू मुझे काम करते देख लेगी तो मेरा हाथ पकड़ कर बोलेगी पिता जी, आज तो आपको काम करते हुए देख लिया, मगर फिर कभी न देखूँ। मैं खुशी से उसको आशीर्वाद दूँगा। मगर हुआ इसका उल्टा कि एक दिन गुप्ता जी के ऑफिस के कुछ दोस्त घर पर आ गए। गुप्ता जी बिना आज्ञा लिए बहु के कमरे में चले गए, और बोले बेटी– मेरे कुछ दोस्त आए हैं जरा उनके

* कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

लिए चाय बना दो। बहू को यह सहन नहीं हुआ। वह खुले दिमाग वाली अपने माँ–बाप की इकलौती सन्तान थी। उसने कभी भी घर के काम नहीं किए थे और न ही कभी यह सोचा था कि उसे एक दिन खाना या चाय भी बनानी पड़ सकती है। उसके तो ऊँचे ख्वाब थे। वह तो खुले आसमान में उड़ने वाली लड़की थी। गुप्ता जी को देख कर बहू आग बबूला हो गई। कहने लगी कि पापा जी क्या आप को इतनी भी समझ नहीं कि किसी के कमरे में आने से पहले आज्ञा लेना जरूरी होता है? गुप्ता जी ने सुना तो दंग रह गए और अपने दोस्तों को बाहर ले जाकर चाय–पानी पिला कर ले आए। गुप्ता जी के सपने चकनाचूर हो गए।

शाम को गुप्ता जी का बेटा अपने क्लीनिक से घर आया। घर आते ही उसकी पत्नी उसे भी उल्टा सीधा कहने लगी, कि पापा जी ने आज मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया है जो मैं सहन नहीं कर सकती। दोनों में बात बढ़ जाती है। उसने अपना रूप और भी भयंकर बना लिया था और कहा कि या तो इस घर में मैं रहूंगी या आपके पापा जी। यह सुनकर बेटा दंग रह गया। बेटे को रात भर नींद नहीं आई और सोचने लगा कि पत्नी तो मेरे जीवन भर साथ रहेगी और पापा जी तो कुछ साल के ही मेहमान हैं इसलिए मैं पापा जी को ही अलग कर सकता हूँ, पत्नी को नहीं। अतः वह अपने पापा जी को आश्रम में भेजने की योजना बनाने लगा।

अगली सुबह जब पापा जी घूमकर बाहर से आए तो बेटा अपने पापा जी को पास बुलाता है और उनके हाथ में कुछ पैसे देते हुए कहता है कि पापा जी ये कुछ पैसे ले लो, अब से आप आश्रम में ही रहा करेंगे। यह सुनकर गुप्ता जी की आंखों में आंसू आ गए, और पैसे वापिस देते हुए कहते हैं कि बेटे ये पैसे तू ही रख ले, क्योंकि कल तेरा बेटा भी तुझे आश्रम जाने के लिए कह सकता है, तब हो सकता यही पैसे तेरे काम आएं। गुप्ता जी यह कह कर दुखी मन और नम आँखों से आश्रम की ओर चल दिए। गुप्ता जी पर जो गुजर रही थी वह तो वो ही जानते थे। कहते हैं–

tkds iSj u QVh fcokbZ]
oks D;k tkus ihM+ ijkbZA

y?kq dFkk

सर्वश्रेष्ठ शासक

प्रियदर्शी सम्राट अशोक के जन्म दिन का महोत्सव था। सभी प्रान्तों के शासक एकत्र हुए थे। सम्राट की ओर से घोषणा हुई कि 'सर्वश्रेष्ठ शासक आज पुरस्कृत होगा'।

उत्तर सीमान्त के प्रान्तपति ने बताया "प्रादेशिक शासक की आय मैं तीन गुनी कर चुका हूं"। दक्षिण के शासक ने निवेदन किया– "राजकोष में प्रति वर्ष की अपेक्षा दोगुना स्वर्ण मेरे प्रान्त ने अर्पित किया है"।

पूर्वी प्रदेशों के अधिकारी ने सूचना दी– "पूर्वी सीमान्त के उपद्रवियों को मैंने कुचल दिया है। वे राज्य के विरुद्ध सिर उठाने का साहस फिर नहीं करेंगे"।

एक और प्रान्तपति उठे– "प्रजा से प्राप्त होने वाली आय बढ़ गयी है, सेवाओं का व्यय घटा दिया है और आय के कुछ दूसरे साधन भी ढूंढ लिये गये हैं। कोषाध्यक्ष श्रीमान को विवरण देंगे"।

अंत में उठे मगध के प्रान्तीय शासक। उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा– "श्रीमान! मैं क्या निवेदन करूं। मेरे प्रान्त ने प्रतिवर्ष की अपेक्षा आधे से भी कम धन राजकोष में दिया है। प्रजा का कर घटाया गया है। राजसेवकों को कुछ अधिक सुविधा दी गयी है। प्रान्त में सार्वजनिक धर्मशालाएं तथा मार्गों पर उपयुक्त स्थलों पर कुएं बनवाये गये हैं। अनेक स्थानों पर रोगियों की चिकित्सा के लिए चिकित्सालय खोले गये हैं और प्रजा के बालकों को शिक्षित करने के लिये पर्याप्त पाठशालाएं खोली गयी हैं"।

सम्राट सिंहासन से उठे। उन्होंने घोषणा की– "मुझे प्रजा का शोषण करके प्राप्त होने वाली स्वर्ण राशि नहीं चाहिए। प्रजा के शूरों की उचित बातें सुने बिना उनका दमन करने की मैं निन्दा करता हूं। प्रजा को सुख–सुविधा दी जाये, मेरी इच्छा है। मगध के प्रान्तीय शासक सर्वश्रेष्ठ शासक हैं। इस वर्ष का पुरस्कार उनका गौरव बढ़ायेगा। अन्य प्रान्तों के शासक उनसे प्रेरणा ग्रहण करें"।

दिल और दिमाग

मीनाक्षी गंभीर *

vc fny dh l|u] ;k fnekx dh]
vkf[kj fny vkj fnekx nkuk gh viu g]
pyk bl ckj fny ij gh Hkjkslk djd n[kr g]
ckr ugh cuh] rk dg nx fny d ikl fnekx
ugh Fkk

बहुत पहले 'दिल' और 'दिमाग' अच्छे दोस्त हुआ करते थे। उनका उठना–बैठना, देखना–सुनना, सोचना–समझना और फैसले लेना, सब कुछ साथ–साथ होता था। फिर इक रोज यूँ हुआ कि 'दिल' को अपने जैसा ही एक हमख्याल 'दिल' मिला। दोनों ने एक दूसरे को देखा और देखते ही, धड़कनों की रफ्तार बढ़ी सी मालूम हुई। मिलना–जुलना बढ़ा तो कुछ रोज में, दिलों की अदला–बदली भी हो गयी। अब एक दिल मचलता तो दूसरे की धड़कने भी तेज हो जातीं, एक रोता तो दूजे की धड़कनें भी धीमे होने लगतीं। बस एक दिक्कत थी कि दोनों सही फैसले नहीं कर पाते थे। वजह कि फैसले दिमाग लेता है और वो अब दिल से दूर हो चुका था। वैसे भी अगर आप, दो लोगों के बीच खड़े हों और अचानक से किसी एक की ओर रुख करके चलने लगें, तो दूसरा खुद–ब–खुद दूर हो ही जाएगा। तब एक रोज 'दिमाग', 'दिल' को समझाने लगा– 'यूँ ही, बिला–वजह, किसी से दिल लगा लेना, ठीक नहीं।

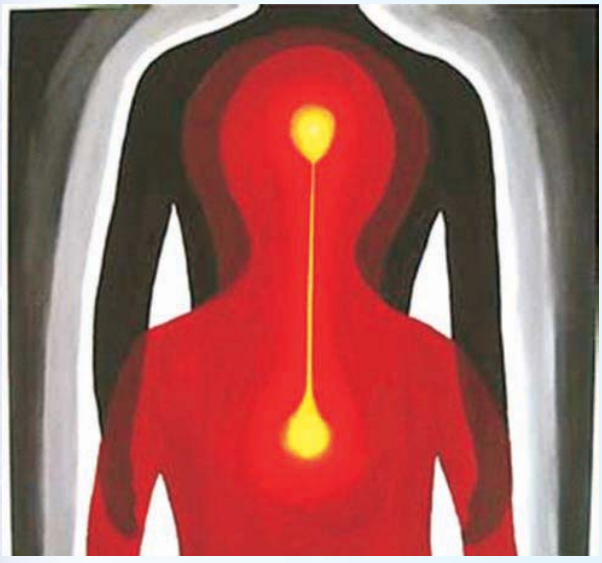

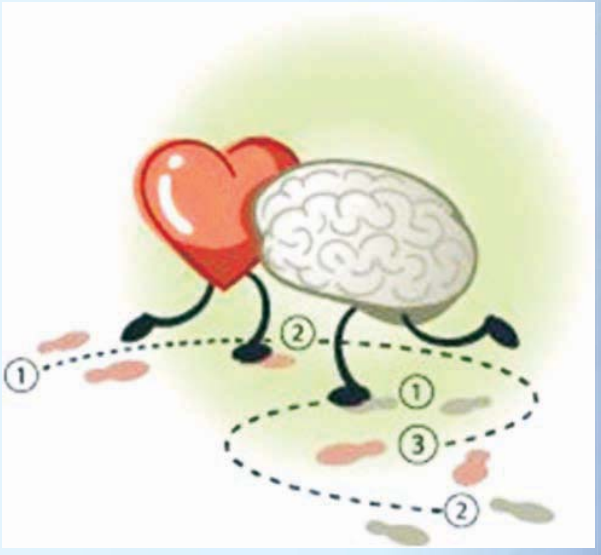

खुद की परेशानियाँ ही क्या कम हैं, जो बेवजह दूसरे के लिए परेशान रहें? दूसरों के लिए धड़का करें? जब अपने जज्बात ही नहीं संभाले जाते, तो फालतू में दूसरों के जज्बात को क्यूँ ढोते फिरें?' अब सोचना और समझना, दिल का काम तो है नहीं। आखिरकार आ ही गया, दिल–दिमाग की बातों में। थोड़ा रो–धोकर अपने हमख्याल दिल को भी छोड़ ही दिया। पर अब वो 'दिल' नहीं रह गया था। 'दिमाग' में तब्दील हो चुका था।

दिल और दिमाग के बीच अजीब कशमकश है। दिल के बड़े अरमान है, बड़ी उड़ान उड़ना चाहता है। दुनिया से एकदम अनजान, कोमल, साफ, स्वच्छ– ये शब्द इसकी पहचान है। ना पीछे की फिकर, ना आगे का ज्ञान, ना ही इसके आँख, मुंह और कान, जब मन में कुछ ठान लेता है किसी की परवाह नहीं करता, इसके विपरीत यदि हम दिमाग की तरफ अगर इशारा करें तो यह दुनिया को किनारा नहीं कर पाता। दिमाग को उड़ने के लिए सहारा चाहिए, आगे और पीछे का पूरा ब्योरा करता है। हरदम आँख, कान, मुंह खुला रखता है, सोच समझ कर अपना घोड़ा चलाता है। दिमाग का केस एकदम निराला है, हमेशा दिल पर ताला लगाता है दिल और दिमाग अगर दोनों का साथ मिल जाये तो

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, नई दिल्ली

आप ही सोचो क्या होगा हमारा ठाठ। अक्सर आपने किसी को कहते सुना होगा क्या करें, दिल नहीं मानता। इन्सान के दिल और दिमाग में एक द्वंद्व हमेशा चलता रहा है। दिल कुछ और कहता है, दिमाग कुछ और। हम सोचते रहते हैं कि दिल की माने या दिमाग की। वैसे तो हमारे शरीर में दिल यानि ह्रदय का काम शरीर में रक्त का संचार बनाये रखना है। लेकिन यहाँ दिल से तात्पर्य है– अंतर्मन, जेहन या हमारी चेतना। इस दिल का काम है हमें सही दिशा दिखाना। हमें सही रास्ते पर चलाना। लेकिन दिमाग यानि मस्तिष्क एक कंप्यूटर की तरह काम करता है जिसमें न भावनाएं होती हैं, न संवेदनाएं। वह नाप तोल कर कुछ का कुछ बनाने में सक्षम होता है इसीलिए दिमाग सत्य को असत्य और असत्य को सत्य बना सकता है। दिमाग ही मनुष्य को बुरे कामों की ओर ले जाता है और तर्क–वितर्क से उसे सही भी ठहरा देता है। लेकिन दिमाग प्रैक्टिकल भी होता है। वह भावनाओं के आवेश में नहीं बहता। वह स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता रखता है जबकि दिल अक्सर भावनाओं में बहकर कभी–कभी गलत निर्णय ले सकता है। ऐसे में सवाल उठता है कि दिल की माने या दिमाग की।

आम तौर पर तो यही कहा जाता है कि जो दिल कहे, वही काम करना चाहिए। लेकिन कहते हैं दिल तो पागल होता है। हमेशा दिल की मानने में हानि भी हो सकती है। अब आप ही बताइए, क्या किया जाये? दिल की माने या दिमाग की? 'दिल' सबसे घुलना मिलना चाहता है। स्नेह करना और पाना चाहता है। यह तर्क नहीं जानता, विमर्श नहीं मानता। 'दिमाग' तर्क करता है, 'क्यों' और 'क्यों नहीं' में उलझा रहता है और इसका समाधान मिलते ही अगली उलझन को निमंत्रण दे डालता है, यही उसकी प्रवृत्ति है। जब व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से मिलता है, संवाद करता है तब वास्तव में दोनों व्यक्तियों के यही अंग अलग–अलग आपस में संवाद करते हैं। 'दिल' से 'दिल' बात करता है और 'दिमाग' सामने वाले के 'दिमाग' को टटोल कर उससे बात करने की चेष्टा करता है यदि 'दिल' और 'दिमाग' सामने वाले के 'दिल' और 'दिमाग' से प्रभावित होते हैं तब वैचारिक मित्रता अथवा स्नेहपूर्ण मित्रता स्थापित होती है दिल और दिमाग का आपसी तालमेल ना है ना कभी होगा, क्या चाहिए क्या करना है, कौन सा रास्ता

सही है, इसमें हमेशा ही दिल और दिमाग बहस करते हैं। दिल हमेशा ऐसे रास्ते पर चलने को कहता है जो खतरनाक होता है, रिस्की होता है और दिमाग हमेशा सुरक्षित रास्तों की तलाश में रहता है, इसी उधेड़बुन को दिल और दिमाग की जंग कहा जाता है दिल जो सोचता है उसके पीछे कोई तथ्य या कारण नहीं होता। दिल की उड़ान बहुत दूर तक होती है। इसमें रहकर आप कुछ निर्णय जल्दबाजी में ले लेते हैं जैसे दोस्ती या प्यार में पड़ना। जबकि दूसरी तरफ दिमाग हर बात को गहराई से समझने की कोशिश करता है। उसमें वो योग्यता होती है, जो किसी भी समस्या को समझकर उसका हल निकाल सके। दोनों ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। अगर दोनों में संतुलन बनाकर जिंदगी का सफर तय किया जाए तो यह मुमकिन है कि हम अपनी मनोवांछित मंजिल पर अवश्य ही पहुंच जाए। जिंदगी में सफलता के रास्ते दिल की गाड़ी पर सवार होकर दिमाग के नेतृत्व में तय किए जाए, तो सफलता निश्चित ही कदम चूमती है। अगर दिल या दिमाग में किसी एक का भी रवैया ढुलमुल रहा तो मुकाम पर पहुंचना असंभव हो जाता है।

हमें अपनी जिंदगी जीने के लिए दिल और दिमाग, दोनों की जरूरत होती है। किसी की शख्सियत में दिल हावी होता है। किसी के लिए दिमाग ज्यादा काम करता है। लेकिन फैसला लेते वक्त एक संतुलन बना लिया

जाए, तो क्या बात है। अब मान लीजिए, हम दिल की बात ज्यादा सुनते हैं। तब हम फैसला लेते हुए दिमाग पर भी थोड़ा–सा जोर डाल लें और अगर हम दिमाग की मानते हैं, तो दिल की भी सुन लें। एक बात है कि फैसला लेने के बाद पछताने जैसा कुछ नहीं होता। चाहे हम दिल की मानें या दिमाग की, फैसला सही ही होगा, इस बात की कोई गारंटी नहीं है। फैसला हम एक पल में लेते हैं और उसका नतीजा किसी दूसरे पल में आता है और ये दोनों पल हमारे वश में नहीं हो सकते। ज्यादा से ज्यादा फैसला लेने का पल हमारा हो सकता है। नतीजे का पल तो हमारे हाथ में नहीं है। सो, जो भी करना है, हमें फैसला लेने के पल में ही करना है और हमारा फैसला भी क्या होता है? वह एक प्रयोग है और वह प्रयोग हम दिल और दिमाग, दोनों से कर सकते हैं। बस थोड़ा–सा संतुलन बना लीजिए।

कहते हैं दिल भले ही लेफ्ट में क्यों ना हो लेकिन होता हमेशा राइट है, वहीं दूसरी ओर दिमाग को कठोर और व्यवहारिक करार देने वाले भी लोग बहुत मिल जाते हैं. ऐसे में मतभेद इस बात पर होता है कि आखिर इन दोनों में से सुनें तो किस की? एक ही मसले पर दिल अलग राय देता है और दिमाग किसी अलग डायरेक्शन में बोलता है इसलिए समझ नहीं आता कि किस राह जाया जाए। ये बात तो हम सभी जानते और मानते भी हैं कि एक मुद्दे पर दिल और दिमाग का फैसला अलग–अलग होता है। जिस बात पर दिल राजी होता है, उसे दिमाग पूरी तरह नकार देता है वहीं दूसरी ओर दिमाग जिसे सही समझता है दिल के लिए वह निर्णय लेना कठोर हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप हम दिमाग के आगे दिल की बात मान लेते हैं। एक बात जरूर समझनी चाहिए कि ना तो दिल कभी गलत राय देता है और ना ही दिमाग का कुछ भी कहना गलत होता है। इस विषय पर गलत और सही का निर्णय सिर्फ परिस्थितियां करती हैं और समझदार इंसान वही है जो भले ही दिल और दिमाग में से किसी की भी सुने लेकिन करे वही जिसके दूरगामी परिणाम सभी के हित में हों।

जिंदगी जैसे खड़ी कुछ सवालों के आगे चक्कर काट रही है। दिल उन सब सवालों के जवाब ढूंढने को बेचैन है और दिमाग अपनी अलग ही दास्तान लिख रहा है। दिमाग कहता है कि अभी उन चीजों का समय नहीं है, तुझे बहुत कुछ हासिल करना है, इन सब सवालों में उलझेगी तो जिंदगी यही रुक जाएगी और ये दिल चाहता है कि नहीं पहले ये सब गुथियाँ जो उलझ गयी हैं, उन्हें यहीं सुलझा ले। क्या पता कल को ये मौका मिलेगा भी या नहीं और आगे चलकर ये फिर से वही गुस्ताखियाँ न कर बैठे। दिल और दिमाग कि ये जंग यूँ तो सदियों पुरानी है फिर भी हर बार ये एक नए मोड़ पे आके खड़ी हो जाती है, जहाँ समझ नहीं आता किस का दामन थामूँ। कभी–कभी सोचती हूँ क्यूँ ये दोनों साथ मिलकर किसी एक समाधान पर नहीं आ सकते? क्यों दिल कुछ और चाहता है और दिमाग कुछ और?

अक्सर लोग कहते आये है अपने दिल कि सुनो, पर क्या सच में किसी के अन्दर अपने दिल की सुनने की ताकत है? बहुत साहस चाहिए इस दिल का कहा मानने को, क्यूंकि अगर आपका एक भी कदम राह से भटक गया तो जिंदगी भर का दर्द दे जाता है, ये साहस और इस बात का एहसास ही हमारे बढ़ते हुए कदमों को थाम लेता है और तब हम इस दिमाग के दिखाए हुए रास्ते को चुनने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिसमें हमें पता है कि शायद इतनी खुशी न मिले हमें पर कम से कम बेपनाह गम तो नहीं मिलेगा, जो कि कहीं ज्यादा बेहतर है।

ykft e g fny d ikl jg ikl cku , vDy
ydu dHkh&dHkh bl rUgk Hkh NkM nA

जिस तरह फूलों में खुशबू है, तिलों में तेल है,
लकड़ी में आग है, दूध में घी है, गन्ने में मीठा रस है,
ठीक उसी तरह शरीर में आत्मा का निवास है।

मुसलमान कवियों का हिन्दी में योगदान

रजनी सूद *

हिन्दू और मुसलमानों के संबंध कैसे भी हों परन्तु साहित्यिक क्षेत्र में मुसलमानों ने हिन्दी की अमूल्य सेवा की, वे हिन्दुओं के अधिक निकट आये। भारतीय सभ्यता और संस्कृति से वे अत्यधिक प्रभावित थे, भले ही वह ऐकेश्वरवाद में यकीन रखते थे तथा उनका मूलमंत्र था yk bYykgk bYykg अर्थात् खुदा के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं। इतना होते हुए भी, वे भारतीय कृष्ण भक्ति परंपरा से बेहद प्रभावित थे। कृष्ण की प्रेम लीला को हम जैसे साधारण लोग समझ नहीं पाते हैं। मथुरा और वृंदावन जा कर देखिए कैसे विदेशी कृष्ण के प्रेम में भारत खीचें चले आते हैं, कुछ तो होगा कृष्ण के प्रेम में जो अपना सब कुछ बेच–बाचकर वह भारत का रुख कर लेते हैं। मुसलमान पुरुषों ने ही नहीं बल्कि मुसलमान स्त्रियों ने भी कृष्ण की पावन लीलाओं का वर्णन किया है। यद्यपि भारत में उस समय मुसलमानों का शासन था, पारस्परिक कटुता दोनों धर्मों के लोगों में समाई हुई थी, फिर भी मुसलमानों में भी कुछ महापुरुष ऐसे थे जो कृष्ण भक्ति और भक्तिकाव्य के प्रणयन में हिन्दुओं से कम नहीं थे। शायद इसीलिए भारतेन्दु हरीशचन्द्र ने कहा थाः–

bu eq lyeku gfj tuu i` dkfVu fgUnu okfj;A

हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही मुसलमान कवियों ने अपनी बहुमुल्य साहित्यिक कृतियों से हिन्दी साहित्य में श्रीवृद्धि की। खड़ी बोली हिन्दी के आदिकवि खुसरो अब से लगभग 800 वर्ष के लगभग विद्यमान थे। वे बलबन के पुत्र मुहम्मद के आश्रित कवि थे। उन्होंने अपनी पहेलियों, मुकरियों द्वारा जनता का खूब मनोरंजन किया। अरबी, फारसी के साथ–साथ उन्हें, संस्कृत का बेहद अच्छा ज्ञान था, संस्कृत भाषा में भी उन्होंने काव्य रचना की। वे बड़े विनोदी स्वभाव के थे। खुसरो की लोकप्रियता का विशेष कारण था उनकी भाषा का लोगों से जुड़ा होना। उदाहरण स्वरूप कुछ रचनाएं देखिये।

gkL;& [khj idkbZ tÙku lq] pj[kk fn;k pyk;]
vk;k dÙkk [kk x;k] rw cBh <ksy ctk;

vkj fQj ^^yk ikuh fiyk
x x x x x x x
eqdjh& og vk, rc 'kkanh gks;]
ml fnu nwtk vkj u dks;
ehBs ykxs okds cksy]
D;ks lf[k lktu\ uk lf[k <ksy

igsyh& ,d Fkky ekfr;ksa ls Hkjk]
lc ds flj ij vkSa/kk fxjk

भक्तिकाल में चार धाराऐं प्रवाहित हुई– दो निर्गुण के अन्तर्गत तथा दो सगुण के अन्तर्गत। निर्गुण पन्थ की दोनों धाराओं में मुसलमान थे, कवियों ने अमूल्य योगदान दिया। ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि कबीर मुसलमान थे, इसमें संदेह नहीं। नीमा–नीरू के पालन–पोषण ने उनके मन में इस्लामी संस्कार पूर्ण रूप से जमा दिए थे। अनपढ़ होते हुए भी अपने अनुभवों के आधार पर कबीर ने हिन्दी साहित्य की जो सेवा की क्या उसको भुलाया जा सकता है?

कबीर के हमें तीन स्वरूप प्राप्त होते हैं– कवि, ज्ञानी तथा समाज सुधारक। वास्तव में वह एक सच्चे समाज सुधारक थे उन्होंने ज्ञान की गुत्थियों को अपने विचित्र प्रतीकों और रूपकों द्वारा जनता को समझाने का प्रयास किया। आत्मा और माया के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कराने वाली उक्ति वैचित्र्य देखिएः–

ty esa dqEHk] dqEHk esa ty] ckgj Hkhrj
ikuh QwVk dqEHk ty tyfg lekuk]
;g r; dF;ks fx;kuhAA
x x x x x x x
dkg js ufyuh rw dqfEgykuh]
rjs gh uky ljksoj ikuh

इसी प्रकार नैना बीच नदिया डूबी जाए आदि उलटवासियों द्वारा गंभीर तथ्यों को समझाने की चेष्टा की है। जिस रहस्यवाद को हम समझ नहीं पा रहे, उसी ज्ञानात्मक रहस्यवाद के वे जन्मदाता थे। आध्यात्मिक प्रेम और बिरह की जैसी तीव्र अनुभूति हमें कबीर की

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

रचनाओं में मिलती है, वैसी अधिकांश हिन्दी के कवियों में नहीं पाई जाती।

कबीर के पश्चात, प्रेमाश्रयी शाखा के प्रधान कवि मलिक मुहम्मद जायसी का नाम आता है। ये महाकवि गोस्वामी तुलसीदास की कोटि में आते हैं। जायसी ने पदमावत काव्य से जिन दोहों और चौपाइयों का मार्ग प्रशस्त किया आगे चलकर तुलसी ने उन्हीं का अनुकरण किया। जायसी का पद्मावत उनकी कीर्ति का अक्षय स्तंभ है। इसमें लौकिक और अलौकिक प्रेम का सामंजस्य दर्शाया गया है।

प्रेममार्गी शाखा तो एक प्रकार से मुसलमान कवियों की ही थी। कुतुबन शेरशाह के पिता हुसैनशाह के दरबारी कवि थे, मंझन कवि ने मधुमालती की रचना की तो उस्मान ने चित्रावली की। इसके अतिरिक्त शेख नबी कासिमशाह, नूरमुहम्मद तथा फाजिलशाह आदि कवियों ने भी सुन्दर प्रेम गाथाऐं लिखी।

अकबर के सेनापति बैरमखां के पुत्र अब्दुर्रहीम खानखाना ने भी अपने नीतिपूर्ण दोहों से हिन्दी साहित्य की सेवा की। बरवै नायिका भेद और मदनाष्टक उनकी सुन्दर रचनाएं हैं। बरवै या प्रारंभिक छंद देखिएः–

ie ihr dk fcjok pY;k yxkb
lhpu dh lfèk yhftvk dg ejf>u u tkb

रहीम के दोहे सबको समान रूप से बांधते हैं, चाहे वे रसिक हो या नीतिज्ञ।

jfgeu ;k l[k gkr g c<r nf[k fut xkrA
D;k cMjh vf[k;k fujf[k vkf[ku dk l[k gkrAA
x x x x x x x
jfgeu vlvk u;u <fj] ft; n%[k idV djbA
tkfg fudkjk xg r] dl u Hkn dfg nbAA

राम भक्ति शाखा में यद्यपि कोई मुसलमान कवि नहीं हुआ, परन्तु कृष्ण भक्ति ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि ताज नामक मुसलमान महिला कवि भी कह उठी–

uUn d dekj djcku rjh lјr iA
gk rk exykuh] fgUnokuh g jgkxh eAA

ताज की तरह शेख नाम की रंगरेजिन भी हिन्दी की भक्त कवयित्री थी, जिसके प्रेम में फंसकर आलम कवि ब्राह्मण से मुसलमान बन गए थे। आलम की गणना हिन्दी के प्रसिद्ध मुसलमान कवियों में की जाती है। यह प्रसिद्ध दोहा कवि आलम का ही हैः–

dud Njh lh dkfeuh] dkg dk dfV Nhu

शेख ने इनका उत्तरार्द्ध यों पूरा किया–

dfV dk dpu dkfV fofèk dpu eè; èkfj nhuA

इस पर मुग्ध होकर आलम ने शेख से विवाह कर लिया।

विशुद्ध कृष्ण भक्ति का उज्जवल स्वरूप हमें रसखान की रचनाओं में प्राप्त होता है

jl[kku dcg bu vkf[ku lk ct d cu ckx rMkx fugkjk
dkfVd g dy èkkr d èkke djhy dh dtu Åij ckjk

x x x x x x x

इन कवियों के अतिरिक्त कादिक और मुबारक, सैंयद रसलीन, नज़ीम अकबरावादी, मुंशी अजमेरी, अख़्तर हुसैन रायपुरी, अध्यापक जहूबख़्श, मीर अहमद बिलग्रामी असंख्य ऐसे नाम हैं जिन्हें आम आदमी नहीं जानते, जानते हैं तो केवल हिन्दी या उर्दू के शौकीन पाठक जिन्हें साहित्य से, शायरी से प्यार है।

भाषा किसी धर्म की मोहताज नहीं, जिस तरह मोहब्बत किसी धर्म को नहीं देखती इसी तरह कलाकार, सृजनकर्ता का कोई धर्म नहीं होता। होती है तो बस कला। मुसलमान कवियों ने अपने साहित्य से हिन्दी को भरपूर योगदान दिया है, चाहे वह महिलाऐं हो अथवा पुरुष। अगर हम कला को कोई भी क्षेत्र देखें तो पाऐंगे मुसलमानों ने कला जगत में अपना भरपूर योगदान दिया है चाहे वह फिल्म इण्डस्ट्री हो, साहित्य जगत हो या कोई अन्य क्षेत्र।

धर्म से इतर मुसलमान कवि आज भी भारत के साहित्य में अपना योगदान दे रहे हैं।

सचित्र गतिविधियाँ – निगमित कार्यालय

निगमित कार्यालय में दिनांक 20.09.2014 को आयोजित वार्षिक साधारण बैठक में निगम द्वारा प्रकाशित हिन्दी स्मारिका 2014 के विमोचन के अवसर पर अध्यक्ष, प्रबंध निदेशक, निदेशकगण तथा अन्य अधिकारीगण

निगमित कार्यालय में दिनांक 20.09.2014 को आयोजित वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर उपस्थित अंशधारीगण

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री दिनांक 09.09.2014 को निगमित कार्यालय में निगम के कार्यनिष्पादन की समीक्षा करते हुए। इस अवसर पर उपस्थित मंत्रालय के संयुक्त सचिव (संग्रह), निगम के प्रबंध निदेशक तथा अन्य उच्च अधिकारी

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री द्वारा दिनांक 09.09.2014 को निगमित कार्यालय के दौरे के अवसर पर उपस्थित मंत्रालय के उच्च अधिकारियों के साथ निगम के प्रबंध निदेशक, निदेशकगण एवं अन्य उच्च अधिकारी

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री से दिनांक 20.10.2014 को वर्ष 2013–14 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु द्वितीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते हुए प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री से दिनांक 20.10.2014 को वर्ष 2013–14 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु विशेष राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ. आर.एस. शुक्ला, क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली

निगमित कार्यालय में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह

वर्ष 2013–14 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए वित्त विभाग की प्रथम राजभाषा शील्ड प्रबंध निदेशक से प्राप्त करते हुए श्री आर.के. साधवानी, उपमहाप्रबंधक (वित्त)

वर्ष 2013–14 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए कार्मिक विभाग की द्वितीय राजभाषा शील्ड प्रबंध निदेशक से प्राप्त करते हुए श्री पवन कान्त, महाप्रबंधक (कार्मिक)

वर्ष 2013–14 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए तकनीकी विभाग की तृतीय राजभाषा शील्ड प्रबंध निदेशक से प्राप्त करते हुए श्री आई.सी. चड्डा, महाप्रबंधक (तकनीकी)

वर्ष 2013–14 के दौरान हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए निरीक्षण विभाग की द्वितीय राजभाषा शील्ड प्रबंध निदेशक से प्राप्त करते हुए श्री ओ.पी. भारती, महाप्रबंधक (निरीक्षण एवं प्रचार)

वर्ष 2013–14 में हिन्दी में अधिकाधिक मूल टिप्पण–आलेखन का पुरस्कार प्रबंध निदेशक से प्राप्त करते हुए श्रीमती शशी स्याल, एसआईओ

निगमित कार्यालय में हिन्दी दिवस एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण

निगमित कार्यालय में पेंशन चैक/एन्यूटी सर्टिफिकेट वितरण शुभारंभ समारोह

निगमित कार्यालय में दिनांक 10.09.2014 को पेंशन वितरण शुभारंभ समारोह के अवसर पर प्रबंध निदेशक सेवानिवृत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पेंशन चैक/एन्यूटी सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए

निगमित कार्यालय में विदाई समारोह का आयोजन

निगमित कार्यालय में दिनांक 30.09.2014 को श्री बी.बी. पटनायक प्रबंध निदेशक एवं श्री ए.के. पुरी, एसआईओ की सेवानिवृत्ति के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित उच्च अधिकारीगण

निगमित कार्यालय में दिनांक 30.09.2014 को श्री बी.बी. पटनायक प्रबंध निदेशक एवं श्री ए.के. पुरी, एसआईओ की सेवानिवृत्ति के अवसर पर प्रबंध निदेशक को पुष्पगुच्छ भेंट करते हुए निदेशक (वित्त) श्री वी.आर. गुप्ता

माननीय मंत्रीजी का केन्द्रीय भंडारण निगम, सीएफएस, कोलकाता एवं एकीकृत चैक पोस्ट, अटारी का दौरा

माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री द्वारा दिनांक 14.09.2014 को सीएफएस, कोलकाता तथा दिनांक 18.09.2014 को एकीकृत चैक पोस्ट, अटारी का दौरा एवं कार्यनिष्पादन की समीक्षा की गई। इस अवसर पर निगम के प्रबंध निदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

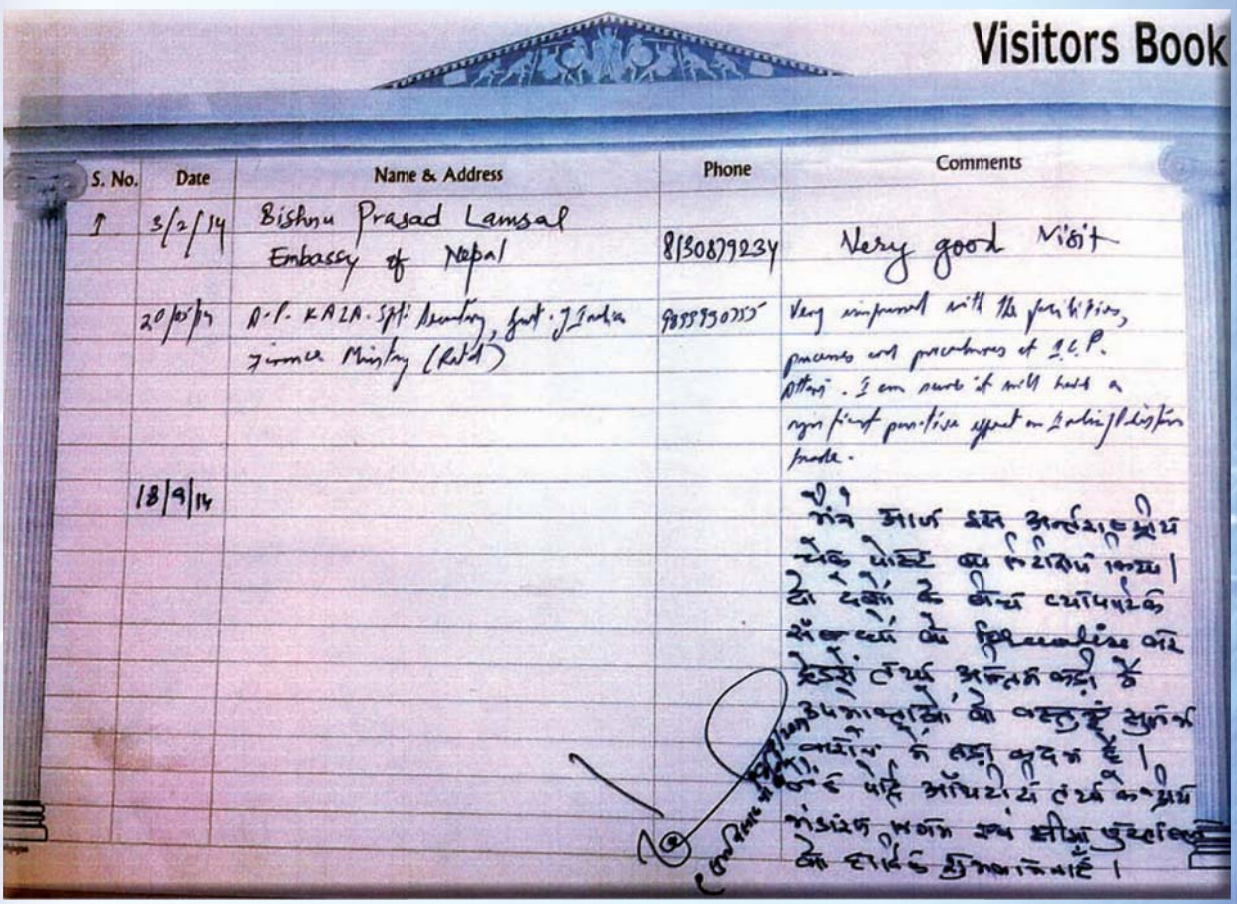

S. No.	Date	Name & Address	Phone	Comments
1	3/2/14	Bishnu Prasad Lamsal Embassy of Nepal	8130879234	Very good Visit
	20/05/14	D.P. KALA. Spl. Secretary, Govt. of India Finance Ministry (Retd)	9855930755	Very impressed with the facilities, process and procedures at I.C.P. Attari. I am sure it will have a significant positive effect on India/Pakistan trade.
	18/9/14			मैंने आज इस अन्तर्राष्ट्रीय चैक पोस्ट का निरीक्षण किया। दो देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को formalise कर [illegible] उपभोक्ताओं को वस्तुएं सुलभ [illegible] बड़ा कदम है। [illegible]

स्वच्छता का महत्व

रणधीर सिंह*

1. आओ स्वच्छ रखें हम, अपने सार्वजनिक स्थान।
सैलानियों के लिए हैं ये, हमारी प्रथम पहचान।।
2. स्वच्छता है अनमोल कोष, जीवन का आधार।
स्वस्थ रहेगी काया, खुशियां मिले अपार।।
3. जीवनदायिनी हमारी नदियाँ, हैं देश की शान।
इन्हें स्वच्छ रखने में, दे अपना योगदान।।
4. स्वच्छता रखे जरूरी, दूर रहेंगे रोग।
प्रथम सुख निरोगी काया, कह गए सभी लोग।।
5. स्वच्छ रहे हर गाँव–शहर, विख्यात हो जाए नाम।
घर–घर की सफाई से, नहीं चले भई काम।।
6. होगी जहाँ पर स्वच्छता, देवता करें वास।
स्वच्छ हमें रखने होंगे, काशी–कावा–कैलास।।
7. स्वच्छता की आदत डाल, जीवन बने महान।
ईश्वर के पश्चात् है, स्वच्छता का स्थान।।
8. सड़क–बस–रेल–मैट्रो, सबके आती काम।
उन्हें स्वच्छ रखने में, नहीं लगे कोई दाम।।
9. सभी बर्बादी रोकने के, कीजिए सब उपाय।
स्वच्छता रहेगी खूब, दिल खुश हो जाय।।
10. स्वच्छता से रहे अगर, सब रखें अनुराग।
गंदगी एक बुराई है, कर दे इसका त्याग।।
11. नियम से स्नान कर, फिर प्रभु को प्रणाम।
हृदय–मस्तिष्क रहे स्फुर्त, पूरे हो सब काम।।
12. तेज तेरे अंदर है, फिर काहे की सोच।
निर्मल बन प्रकाश की भाँति, मत कर तू संकोच।।
13. स्वच्छता रोज अपना ले, सुगम हो जाए वास।
सतर्क हमें रहना होगा, बन ईश्वर का दास।।
14. निश्चित स्थान पर अगर, रखें हम सामान।
स्वच्छता बनी रहेगी, जीवन बने आसान।।
15. तन–मन रख खूब स्वच्छ, कर भगवान का ध्यान।
अभ्यास से बन जाएगा, व्यक्ति एक महान।।

* वरिष्ठ परामर्शदाता (राजभाषा), सीआरडब्ल्यूसी, नई दिल्ली

रचनाकार कृपया ध्यान दें

1- Ñi;k if=dk e i dk'ku d fy, y[k lhèk fuxfer dk;ky; d jktHkk"kk vuHkkx d ey % rajbhasha.cwc@gmail.com ij ;k Mkd }kjk HkstA
2- y[k d lkFk bl vk'k; dh ?kk"k.kk gkuh pkfg, fd ;g y[k@jpuk y[kd dh ekfyd jpuk gA
3- ;fn fdlh dkj.ko'k y[k@jpuk dk if=dk e 'kkfey djuk lEHko u gvk rk ml ykVk;k ugh tk,xkA
4- jpuk, Hkt r le; Ñi;k bl ckr dk [;ky j[k fd og Lrjh; gk rFkk lekt] lkfgR; ,o lLÑfr l tMh gb gkA
5- Hk.Mkj.k l lcfèkr jpukvk dk ikFkfedrk nh tk,xhA idkf'kr jpukvk ij ijLdkj@ekun; inku fd;k tkrk gA
6- fuxe d lokfuoÙk vfèkdkjh@depkjh Hkh viuh jpuk, idk'kukFk Hkt ldr gA ;fn o if=dk i<u e #fp j[kr gk rk viuk irk bl dk;ky; dk Hkt n] rkfd mUg if=dk Hkth tk ldA
7- vki viuh jpuk, fuEufyf[kr ir ij Hkt ldr g&

icèkd ¼jktHkk"kk½
dUnh; Hk.Mkj.k fuxe] fuxfer dk;ky;]
4@1] lhjh bLVhP;'kuy ,fj;k] vxLr ØkfUr ekx] gkt [kkl]
ub fnYyh&110 016

निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं वेअरहाउस में आयोजित स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत निगमित कार्यालय नई दिल्ली में श्री हरप्रीत सिंह, प्रबंध निदेशक, श्री वी.आर. गुप्ता, निदेशक (वित्त) एवं श्री जे.एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत मयूर विहार, नई दिल्ली में महाप्रबंधक (कार्मिक) एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अवसर पर कार्यकारी अभियन्ता, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली के अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ स्वच्छता अभियान में सक्रिय भूमिका निभाते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल में अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता शपथ में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी में क्षेत्रीय प्रबंधक स्वच्छता शपथ में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं अन्य स्टाफ स्वच्छता शपथ में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत सेंट्रल वेअरहाउस, रोपड़ के कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई में क्षेत्रीय प्रबंधक एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए

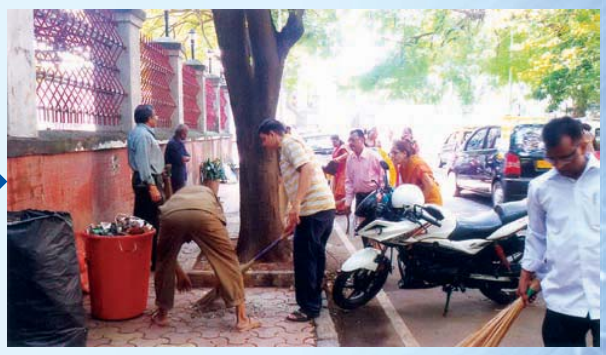

रक्तदान शिविर का आयोजन

निगमित कार्यालय में दिनांक 12.08.2014 को रेडक्रॉस सोसायटी के साथ मिलकर आयोजित किये गये रक्तदान शिविर में प्रबंध निदेशक रक्तदान करते हुए। निदेशक (कार्मिक) भी इस अवसर पर उपस्थित थे

सेन्ट्रल वेअरहाउस, हिसार को किसान मेले में श्रेष्ठ स्थान

चौधरी चरण सिंह एग्रीकल्चर युनिवर्सिटी हरियाणा द्वारा दिनांक 09 से 10 सितम्बर, 2014 को आयोजित किसान मेले में सेन्ट्रल वेअरहाउस, हिसार ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह

हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित समारोह में अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, मुंबई

हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित समारोह में अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, पटना

हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित समारोह में अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, गुवाहाटी

हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, पंचकुला

हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, बेंगलुरु

दिनांक 16.09.2014 को आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, हैदराबाद अधिकारियों/कर्मचारियों को व्याख्यान देते हुए

हिन्दी दिवस के उपलक्ष में आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार एवं कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण को संबोधित करते हुए श्री पी.ई.प्रसाद, क्षेत्रीय प्रबंधक, हैदराबाद

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए डॉ. अनुराग त्रिपाठी क्षेत्रीय प्रबंधक, अहमदाबाद

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मुख्य अतिथि से प्राप्त करते हुए सुश्री स्वर्णिमा वाजपेयी, सहायक अभियन्ता, क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद

हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में धन्यवाद ज्ञापन देते हुए श्री संजीव पाल, सहायक अभियन्ता, क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल में आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए क्षेत्रीय प्रबंधक, भोपाल

आईसीडी, पटपड़गंज, दिल्ली में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित प्रबंधक, आईसीडी एवं अन्य अधिकारी/कर्मचारी

खेल समाचार

राजीव विनायक*

खेलों का जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। खेल जीवन का आधार है। खेल से व्यक्ति सदैव स्वस्थ रहता है और स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन को नयी दिशा प्रदान कर सकता है तथा राष्ट्र निर्माण में अपना भरपूर योगदान दे सकता है। इसी बात को ध्यान में रखकर निगम के प्रबन्धन द्वारा निगम में खेलों को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जा रही हैं। निगम में जहाँ गणतंत्र दिवस और स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बैडमिन्टन प्रतियोगिताएँ की जाती हैं, वहीं प्रतिभावान खिलाड़ियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं ताकि निगम द्वारा खेलों को प्रोत्साहित किया जा सके। छात्रवृत्ति प्राप्त खिलाड़ियों द्वारा विभिन्न खेलों में पुरस्कार प्राप्त किए गए हैं जिसका विवरण इस प्रकार है:–

Vcy Vful

f'keyk VukeVः निगम की छात्रवृत्ति प्राप्त आशिता जैन ;Fk xYl में विजेता रहीं, वहीं देव खण्डेलवाल ;Fk Cok;t में द्वितीय स्थान पर रहे। निगम की टीम eUl Mcy में विजेता रही।

देव खण्डेलवाल दिल्ली यूनिवर्सिटी में भी प्रथम स्थान पर रहे।

श्री सुशील टेकचंदानी दिल्ली में खेले गए मास्टर्स टूर्नामेंट में mi fotrk रहे।

श्री विनय चोपड़ा पुणे में खेले गए ऑल इंडिया स्टैग टूर्नामेंट में eUl Mcy में तृतीय स्थान पर रहे।

cMfeUVu

कुमारी संस्कृति भीलवाड़ा टूर्नामेंट में क्वार्टर फाइनल में पहुँची।

दिल्ली राज्य में भी वह उप विजेता रहीं।

जालन्धर में खेले गए नॉर्थ जोन टूर्नामेंट में वह उप विजेता रही। इंटर कॉलेज टूर्नामेंट में भी वह उप विजेता रहीं।

_"kHk lgno बरेली में खेले गए ऑल इंडिया सीनियर रेंकिग टूर्नामेंट में मेन्स में क्वालिफांइग राउन्ड (32) तक पहुँचे। चण्डीगढ़ में भी वह टॉप 8 में पहुँचे। नॉर्थ जोन यूनिवर्सिटी में वह उप विजेता रहे। हैदराबाद में खेले गए सीनियर रेंकिग टूर्नामेंट में वह टॉप 64 में पहुँचे। जूनियर रेंकिग में वह टॉप 16 में पहुँचे। राजस्थान भीलवाड़ा में टॉप 64 में पहुँचे। गुजरात (गांधी धाम) में संपन्न सीनियर रेकिंग टूर्नामेंट में टॉप 64 में पहुँचे। नैशनल रेकिंग में सीनियर्स ग्रुप में वह 56वें नम्बर पर पहुँचे तथा नैशनल रेकिंग में ही जूनियर्स में वह 45वें नम्बर तक पहुँचे।

dekjh lLdfr vkj _'kHk lgno ने नैशनल गेम्स में डबल्स में गोल्ड मेडल जीता।

dekjh lLdfr] g"ko/ku] fpdkjk ने जापान में सम्पन्न बैडमिन्टन टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

* खेल सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन

fnukd	{kerk ¼yk[k Vuk e½	{kerk mi;kx	ifr'krrk
01.08.2013	106.40	95.08	89
01.08.2014*	104.61	86.08	82
01.07.2014	104.85	87.27	83
01.09.2013	106.40	93.25	88
01.09.2014*	104.36	84.74	81
01.08.2014	104.76	85.10	81
01.10.2013	106.37	91.12	86
01.10.2014*	102.74	83.00	81
01.09.2014	103.91	82.41	79

*(अनंतिम)

जुलाई से सितंबर, 2014 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

Øe- l-	dk;Øe dk 'kh"kZd	dk;Øe vof/k
1.	गुणवत्ता नियंत्रण	07–09 जुलाई, 2014
2.	नेतृत्व विकास कार्यक्रम	14–15 जुलाई, 2014
3.	वेअरहाउस निरीक्षण	23–25 जुलाई, 2014
4.	दालों एवं तिलहनों की खरीद	31 जुलाई–01 अगस्त, 2014
5.	वेअरहाउसिंग सेवाओं का विपणन एवं ग्राहक संबंध प्रबन्धन (सीआरएम)	06–08 अगस्त, 2014
6.	कीट प्रबन्धन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	20 अगस्त, 03 सितम्बर, 2014
7.	लेखाकारों के लिए परिचय प्रशिक्षण	04–05 सितम्बर, 2014
8.	सहायक अभियंताओं के लिए परिचय प्रशिक्षण	04–05 सितम्बर, 2014
9.	लॉजिस्टिक्स एवं सप्लाई चेन प्रबन्धन	08–09 सितम्बर, 2014
10.	151वाँ अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम	10–20 सितम्बर, 2014
11.	प्रशासनिक सतर्कता का अभिमुखीकरण	22–24 सितम्बर, 2014

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

¼igyh tqykbZ] 2014 ls 30 flrEcj] 2014 dks nkSjku½

Ø- l-	uke	inuke	rSukrh LFkku	{k=
1.	श्री बी.बी. पटनायक	प्रबन्ध निदेशक	निगमित कार्यालय	निगमित कार्यालय
2.	श्री आर.जे.वी. प्रसाद	उ.म.प्र. (सामान्य)	नि. का., वाणिज्यिक विभाग	निगमित कार्यालय
3.	श्री ए.के. अरोड़ा	म.प्र. (वित्त एवं लेखा)	नि. का., वित्त विभाग	निगमित कार्यालय
4.	श्री एस.एस.एच. रिजवी	अधि. अभियन्ता (सिविल)	नैनी	लखनऊ
5.	श्री ए.के. शर्मा	प्रबंधक (सा.)	नि. का., आर. एण्ड डी. विभाग	निगमित कार्यालय
6.	श्री मोहिन्द्र सिंह	प्रबंधक (सा.)	क्षे.का., दिल्ली	दिल्ली
7.	श्री वी. सुब्रामणियन	वं.स.प्र. (सा.)	क्षे.का., चेन्नई	चेन्नई
8.	श्री ज्ञान प्रकाश	सहायक अभियन्ता (सिविल)	श्योपुरकलाँ	भोपाल
9.	श्रीमती शारदा विरमानी	निजी सचिव	नि.का., तकनीकी विभाग	नि.का.
10.	श्री अजीत कुमार सिन्हा	भं.एवं नि. अधिकारी	वाडाला	मुंबई
11.	श्री टी.पी.एल. श्रीवास्तव	भं.एवं नि. अधिकारी	आ.डब्ल्यू.सी, आलमनगर	लखनऊ
12.	श्री एन.एच. पाटिल	भं.एवं नि. अधिकारी	सी.एफ.एस., डी. नोड	नवी मुंबई
13.	श्री जगमोहन सिंह	भं.एवं नि. अधिकारी	आई.सी.डी., पटपड़गंज	दिल्ली
14.	श्री बी.आर. कदम	अधीक्षक	क्षे.का. मुंबई	मुंबई
15.	श्री गिरधारी लाल	अधीक्षक	बरही	पंचकुला
16.	श्री ए.बी. राठौड़	अधीक्षक	सूरत–I	अहमदाबाद
17.	श्री आर.के. शर्मा	कनि. अधीक्षक	चंदौसी–I	लखनऊ
18.	श्री करम सिंह	कनि. अधीक्षक	मोगा–II	चंडीगढ़
19.	श्री राम शंकर	कनि. अधीक्षक	भरतपुर	जयपुर
20.	श्री आर.के. श्रीवास्तव	कनि. अधीक्षक	क्षे.का. लखनऊ	लखनऊ
21.	श्री बी. संजीवा राव	कनि. अधीक्षक	सी.एफ.एस., कुकटपल्ली	हैदराबाद
22.	श्री राम निरंजन वर्मा	कनि. अधीक्षक	क्षे.का., लखनऊ	लखनऊ
23.	श्री एम.जी. सात्विक	कनि. अधीक्षक	पुणे	मुंबई
24.	श्री ए.एस.सी. प्रकाश	वे.स.–I	वारंगल	हैदराबाद
25.	श्री हरि सिंह	वे.स.–I	जसपुर	लखनऊ
26.	श्री रामफल सिंह	वे.स.–I	बी.डी. लोनी	दिल्ली
27.	श्री बी. दास मुखर्जी	वे.स.–I	मोगरा	कोलकाता
28.	श्री एम.एन. भोइर	वे.स.–I	काजूपाड़ा	मुम्बई
29.	श्री कुलवन्त सिंह	वे.स.–I	अमृतसर (बीडी)	चंडीगढ़
30.	श्री बी.डी. सिंह	अधिशासी अभि. (सिविल)	सी.एफ.एस., डी. नोड	नवी मुंबई
31.	श्री आर.एस. रमन	व.स.प्र. (लेखा)	क्षे.का., भुवनेश्वर	भुवनेश्वर

Ø- l-	uke	inuke	rukrh LFkku	{k=
32.	श्री वी.के. माहेश्वरी	स.प्र. (लेखा)	क्षे.का., पटना	पटना
33.	श्री नरेन्द्र कुमार	भं.एवं नि. अधिकारी	जसपुर	लखनऊ
34.	श्री वी. सम्बा सिवा राव	भं.एवं नि. अधिकारी	अंगोले	हैदराबाद
35.	श्री आर.वी. पाटिल	भं.एवं नि. अधिकारी	सी.एफ.एस., डिस्ट्रीपार्क	नवी मुम्बई
36.	श्री यू.एस. दबास	भं.एवं नि. अधिकारी	सी.एफ.एस., कुण्डली	दिल्ली
37.	श्री बालक राम	भं.एवं नि. अधिकारी	दादरी	लखनऊ
38.	श्री आर.के. खुशवाहा	भं.एवं नि. अधिकारी	आर.डब्ल्यू.सी., कांडला	अहमदाबाद
39.	श्री एस.वी. सरकार	भं.एवं नि. अधिकारी	क्षे.का., भुवनेश्वर	भुवनेश्वर
40.	श्री महेन्द्र पाल सिंह	अधीक्षक	कानपुर, सी.वी.	लखनऊ
41.	श्री एस.पी. सक्सेना	अधीक्षक	लखनऊ–।।	लखनऊ
42.	श्री के.सी. यादव	अधीक्षक	सी.एफ.एस., अदालज	अहमदाबाद
43.	श्री यू.एस. चौहान	अधीक्षक	आई.सी.डी., लोनी	दिल्ली
44.	श्री सी. जौन मनोहर	अधीक्षक	नागरकोइल	चेन्नई
45.	श्री एम.के. बनर्जी	कनि. अधीक्षक	पानीहाटी	कोलकाता
46.	श्री शेवराज सिंह	कनि. अधीक्षक	गाजियाबाद–।	दिल्ली
47.	श्री एम.एल. नरसिम्हन	कनि. अधीक्षक	फ्लाईओवर, संथ नगर	हैदराबाद
48.	श्री के.एन. ससमल	कनि. अधीक्षक	खड़गपुर	कोलकाता
49.	श्री जी.एस. मिश्रा	कनि. अधीक्षक	शाहजहांपुर	लखनऊ
50.	श्री दीपक चन्द्र तपादर	वे.स.–।	बिराटी	कोलकाता
51.	श्री आर.डी. कलस्कर	वे.स.–।	गुलबर्गा–।।	बेंगलूरू
52.	श्री धन बहादुर	चौकीदार–।	नि.का., कार्मिक विभाग	निगमित कार्यालय
53.	श्री एम.एन. दखने	भं. एवं नि. अधिकारी	पी.सी.सी., कांडला	अहमदाबाद
54.	श्री अनिल कुमार पुरी	भं. एवं नि. अधिकारी	नि.का.	निगमित कार्यालय
55.	श्री के. सिवाप्पा नाईक	अधीक्षक	बेंगलूरू–।	बेंगलूरू
56.	श्रीमती सुमित्रा देवी	अधीक्षक	कीर्तिनगर	दिल्ली
57.	श्री अशोक कुमार सिन्हा	अधीक्षक	फतूहा	पटना
58.	श्री जगमोहन कुमार	लेखाकार	क्षे.का., चंडीगढ़	चंडीगढ़
59.	श्री एस.एस. व्यास	कनि. अधीक्षक	नासिक रोड	मुम्बई
60.	श्री एस. रविन्द्रन	कनि. अधीक्षक	पांडिचेरी	चेन्नई
61.	श्रीमती वी. मलिका	कनि. अधीक्षक	क्षे.का. चेन्नई	चेन्नई
62.	श्री प्रदीप चन्द्र दत्ता	कनि. अधीक्षक	से.वे. बोनहुगली	कोलकाता
63.	श्री वी.के. वैतुले	कनि. अधीक्षक	बोनहुगली	कोलकाता
64.	श्री ए.के. गिरके	वे.स.–।	मोरेना–।।	भोपाल
65.	श्री बी.एन. मुखर्जी	वे.स.–।	पंचपाड़ा	कोलकाता

स्वच्छता शपथ

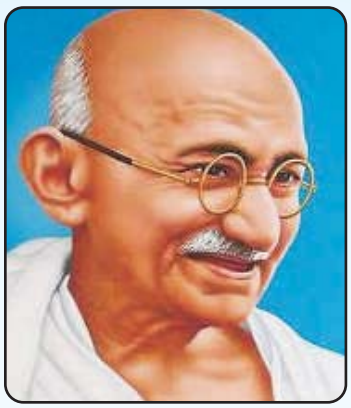

महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी।

महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आज़ाद कराया।

अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।

मैं शपथ लेता हूं कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूंगा और उसके लिए समय दूंगा।

हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घण्टे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूंगा।

मैं न गंदगी करूंगा न किसी और को करने दूंगा।

सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरूआत करूंगा।

मैं यह मानता हूं कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहां के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं।

इस विचार के साथ मैं गांव-गांव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूंगा।

मैं आज जो शपथ ले रहा हूं, वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाऊंगा।

वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घण्टे दें, इसके लिए प्रयास करूंगा।

मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।

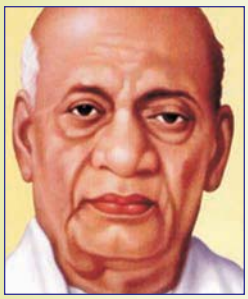

आपकी अच्छाई आपके मार्ग में बाधक है इसलिए अपनी आँखों को क्रोध से लाल होने दीजिए और अन्याय का मजबूत हाथों से सामना कीजिए।

– सरदार वल्लभभाई पटेल

जीवन में ज्यादा रिश्ते होना ज़रूरी नहीं है,
पर जो रिश्ते हैं उनमें जीवन होना ज़रूरी है।

– स्वामी विवेकानन्द

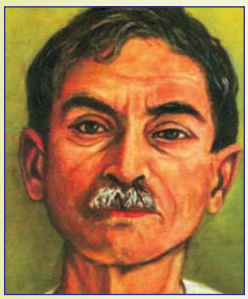

खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है।
जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।

– मुंशी प्रेमचंद

परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है
और स्थिर होना मृत्यु।

– जयशंकर प्रसाद

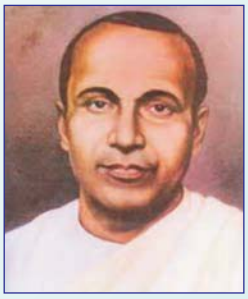

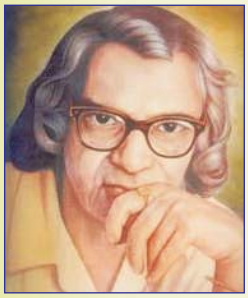

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति
की सरलतम स्रोत है।

– सुमित्रानंदन पंत

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016